गीता भगवान वाणी

त्याग भावना से ज्ञानी भोगता है। सब सुख जो भी दुनिया का है, वो ज्ञानी को ही भोगने का हक है क्योंकि उसके अंदर त्याग है, वैराग्य है। किसी के शरीर से attachment नहीं है, किसी चीज़ से attachment नहीं है। भई मैं ये खाता हूं, कल भी चाहिए, परसों भी चाहिए - नहीं। सारी उम्र ये चीज़ नहीं मिले, सारी उम्र ये आदमी सामने नहीं आए, सारी उम्र शायद हम इससे नहीं भी मिलें, तो भी घर से आदमी गया रात को नहीं भी आवे, ऐसा भी ज्ञानी पक्क करके बैठा है। तुम लोग का कोई जाएगा, तुम बोलोगे- भई कितने बजे आएगा ? मै पूरी बनाऊंगी, मैं पकोड़ा बना के रखूंगी, रात को आना, वो रात को आता ही नहीं। एक माई का मर्द गया office में, taxi में ही ख़तम हो गया, खल्लास हो गया वहीं पे,रात को आया ही नहीं घर में। वो बोली- अरे मैंने ये बनाया, मैंने ये प्रोग्राम बनाया था, इधर जाना था,मैं तो ऐसा करने वाली थी - ये है अज्ञानी की बात। और ज्ञानी, खिन- खिन में बदली होने वाले जगत से कभी प्रीत नहीं रखता है, second- second में change होने वाला है। जिसके साथ भी बैठा है , समझता है ये भगवान है और इसका शरीर मटका है कभी भी टूट सकता है।

जो शरीर से नहीं बैठा, वो भगवान से बैठा है। ज्ञानी अंदरवाले का मज़ा लेता है, अंदर वाले से बैठा है , अंदर वाले को प्यार करता है। बाहर वाले से उसका वास्ता ही नहीं है, बाहर वाला आता या जाता है, जन्मता या मरता है, उसको तो पता ही नहीं । बाहर वाले में जो ध्यान रखता है, जो मूर्ख लोग हैं, मिथ्या से प्रीत रखता है, तभी सजा भोगता है। भगवान उसको सजा देता है कि तुमने मिथ्या से प्रीत क्यूं रखी। अभी मिथ्या पदार्थ में ले के जाता है, तुम अभी क्या करेगा - एक भी ना दे, दस भी हर ले,तो मूढ़ा कहो क्या करे। एक भी नहीं दूं और दस भी तुम्हारा ले के जाऊं, तुम क्या करेगा ? मूर्ख मत्था फाड़ेगा, तोड़ेगा, ज़मीन पे फोड़ेगा, दीवार से फोड़ेगा।बोलेगा, भगवान तुम्हारे राज में अंधेर है अंधेर। तुम्हारी तो ऐसी छोटी बुद्धि है, मूर्खों की । तुम बोलोगे " इस बेचारी का ना पति मर गया तीन महीने भी नहीं हुआ। तो तुम जाएगी सब उसके घर में, बोलेगी तुम्हारे घर में तो अंधेर हुआ है। ज्ञानी नहीं बोलेगा कि अंधेर हुआ, वो बोलेगा तुम्हारा तो योगी का जन्म हुआ, अरे तुम तो कचरे से छूट गई, गंदगी से छूट गई, बच्चों से, विषय से, विकार से, तुम तो सच्चा योगी बन गई, तपस्वी बन गई। कोई योगी तपस्वी बनता है, बेचारा ज़बरदस्ती जा के सारी दुनिया छोड़ के और जंगल में बैठ के ब्रह्मचर्य का व्रत रखता है। अभी इधर तुम सहजे ही ब्रह्मचर्य में रह गई, सहजे ही तुम्हारा ये विषय- विकार छूट गया। कौनसी खराब बात हो गई ? तुम भगवान का भजन करो, मीरा बनो - मीरा का तो मर्द था तो भी छोड़ दिया और तुम मर्द के लिए रोती है ? मीरा, माता मदालसा ये जो भी स्त्रियां थी जिसने पति को भी तारा, अपने को भी तारा - तो विषय विकार से दूर हट के अपने को भी strong बनाया, सबको strong बना दिया। तो तुम ऐसी देवी माता बनो जो तुम भी strong बनो जो तुम्हारे सामने कोई भी मर्द आंख उठा के नहीं देखे कि ये स्त्री है। नहीं ये स्त्री नहीं है, ये तो भगवान है, कैसे देखती है। तुम्हारी शेर वाली आंखें होनी चाहिए। शेर का बेटा शेर होता है, बकरी नहीं होता है। बकरियां पीछे पीछे फिरती हैं। शेर ऐसा जंगल का राजा, अकेला चलता है। मैं भगवान हूं, मैं स्त्री नहीं हूं मैं भगवान हूं। तुमको किसी ने बोला है तुम भगवान है ? कितनों ने बोला है तुम भगवान हो ?

नहीं, ये लड़की है, ये छोकरी है क्योंकि तुम हंसेगी, तुम खाएगी, तुम शर्म करेगी, तुम हया करेगी, तुम्हारे अंदर ऐसी भावनाएं उठेंगी स्त्रियों की , तो सब बोलेगा ये तो स्त्री है। तो तुम हार जाएगी किसी ना किसी के आगे, कोई पुरुष तुम्हारे ऊपर जीत पा लेगा। लेकिन जब कोई पुरुष देखेगा तो ये कैसे जाती है रास्ते से, डर जाएगा, भई ये कोई औरत नहीं है, ये तो कोई महान शक्ति है। इससे कौन बात करेगा ? मार थोड़ी खाने की है। तो कोई तुम्हारे को देखेगा भी नहीं, अपना भी नहीं पराया भी नहीं। कोई किस नजर से नहीं देखेगा कि ये एक साधारण स्त्री है, बच्चा पैदा करने वाली, भोगों वाली, विषय वाली कोई स्त्री भी है, ये तुम्हारे शरीर का भाव बिल्कुल मिट जाना चाहिए। तुम पवित्र भावना में रहो। अपनी शक्ति में रहो। तुम है पवित्र, पवित्रता की देवी। तो तुम्हारी पवित्रता हजारों कोसों तक , खाली तुम्हारा कोई नाम लेगा, तो भी पवित्र हो जाएगा। तुम्हारा दर्शन तो छोड़ो, कोई खाली तुम्हारा नाम लेगा ना फलाना फलानी तो उधर ही पवित्र हो जाएगा तुम्हारा नाम ले के। ऐसा तुम्हारी शक्ति होनी चाहिए। ऐसी तुम्हारे अंदर में पवित्रता होनी चाहिए। जो कभी भी तुम्हारा कोई नाम लेवे, तुम्हारी शक्ल देखे, तो तुम्हारी शक्ल में पूर्ण परमात्मा का दर्शन करे। स्त्री ऐसी आरसी बन जाए, साफ़ शीशा बन जाए जो दुनिया के सभी मर्द लोग उसमें पूर्ण पवित्रता का दर्शन करे, खुद परमात्मा का दर्शन करें तुम्हारी आंख में। भई इसको तो मैं देख नहीं सकता हूं, ये तो ऐसी शक्तिशाली है। इसकी आंख में मैं देख नहीं सकता हूं, इसकी आंख से जैसे किरणें आती हैं सूरज की। ऐसी इस में शक्ति है, मैं देख नहीं सकता हूं, मैं touch नहीं कर सकता हूं। मेरे को आग लग जाती है, ये ऐसी स्त्री है। ऐसी स्त्रियों में power है आत्मिक शक्ति है, ये पवित्रता की शक्ति है। अव्यभिचारी भक्ति योग में जो रहती है, उस में अंदर ये सब चीज़ आ जाती है। तभी वो नारी नर को भी तारती है और दुनिया में ऐसा कोई नर नहीं जो इस नारी में आंख रख सकता है कोई भी, खल्लास।

उसको बोलता है best day today, माना today, तुम ऐसा कसम उठाओ सब बात का भई आज मैं बैठा हूं सत्संग के बीच में, मेरे में ये- ये बातें नहीं होनी चाहिए। आज मैं ये कसम उठाता हूं। तो मैं आज सर्वत्र भगवान देखूंगा, सब से एक जैसा प्यार रखूंगा, किसी से भी राग द्वेष नहीं, कमती - ज्यासती नहीं। सर्वज्ञ, सर्वस्व देखूंगा कि ये सब भगवान ही भगवान है। और मैं ऐसी पवित्रता में रहूंगा कि राग और द्वेष की दुनिया से ऊपर चढ़ जाऊंगा। प्रेम की दुनिया में रहूंगा। ऐसा बाहर कोई भी हालत, कोई भी तूफान आएगा , तो मेरा best day today है क्योंकि वो मेरे को लगेगा नहीं। तभी मेरा best day है आज। कौन सा भी ड्रामा होएगा सारे दिन में, हम मुस्कुराएगा, हम हंसेगा। अभी सुना पट्टियां बांधी पड़ी होएंगी तुम्हारे मुंह पर, ऐसा भी accident अगर हो जाए तो भी तुम्हारी आत्मा मुस्कुराती रहे। आत्मा को कुछ नहीं लगता है। तो ऐसी तो हालत नहीं हुई है तुम्हारी ? तो भी तुम रोता है, तो भी तुम mood खराब करता है ? बोला ऐसी भी हालत हो जाए, तो भी तुम्हारी आत्मा मुस्कुराए। कैसा भी हालत आ जाए, कैसा भी दुख आ जाए, तुमको असर नहीं करे। सब दिन best day है। जिस दिन दुख आता है, तो भी तुम्हारी परीक्षा है, जिस दिन सुख आता है, तो भी तुम्हारी परीक्षा है। ऐसा नहीं है सुख आता तो best day है। सुख के दिन तो ज्यासती परीक्षा है। तुम गिरता है उस में कि नहीं। जब सुख वाला सामने आए, अच्छा, प्रिय सामने आवे, तुम्हारे मोह वाला सामने आवे बहुत सुख देने आए तुमको " ये present देता हूं, मैं प्यार करता हूं, मैं ऐसा करता हूँ, तुम क्या नहीं है।“ जब ऐसा सुख आवे, तभी रोना आवे, खून का आंसू उसी दिन आवे। जब सुख सामने आवे, तब सयाना उसमें कभी भी ऐसे गिरता नहीं है। और जैसे सब खुश हो के गया है, तैसा वो चलता है। हमेशा अदब माना नम्रता करता रहता है, सबके आगे झुकता रहता है। और सुख के आगे कभी खुश नहीं होता कि आज मेरे को सुख मिला। दुख दारू सुख रोग भया ।

जिज्ञासु सच्चा, सुख को रोग समझता है। सारी दुनिया के भोगों को रोग समझता है और दुख से पूर्ण तरह से प्रीत रखता है कि दुख आया ही है भगवान के नज़दीक लाने के लिए। इसलिए दुख में वो कभी घबराता नहीं है, रोता नहीं है और समझता है कि मैं भगवान को याद हूं, तभी तो मेरे को दुख भेजें है कि तुम मेरे नज़दीक आ जाए। इसके लिए हर रोज़ जो है, तुम्हारा best day होना चाहिए, चाहे दुख आवे चाहे सुख आवे।

दूसरे का नाम निकलता है, मेरा नाम ही नहीं है। भई मैं घर में इतना मर के भी चलती हूं, तो भी दूसरे का नाम निकलता है। मेरा तो नाम ही नहीं है। तो तुम्हारा नाला और नाम जो है ना, वो नाले में डाल के आओ अपना नाम। नाम किसका निकले, भगवान का कि तेरा ? सब नाम के पीछे इतने हैं।

मैं मर के भी पूरा हो जाऊंगी, कितनी मर्यादा करूंगी, कितना भी दुख मेरे को लगे लेकिन मेरा नाम जरूर निकले। ये फलानी ना बड़ी अच्छी है। उसी अच्छाई के लिए तुमने चप्पल भी अपनी थोड़ी कर दी, बाल भी खोटा किया लेकिन मैं अच्छी बनूं, मैं दुनिया में अच्छी देखने में आऊं, मेरे को सारी दुनिया अच्छा समझे। इसको अच्छा नहीं समझे, मेरे को समझे। नमक ज्यासती तुम्हारी भाजी में पड़ेगा ना तो भी बोलेगी जेठानी ने डाला, हमने नहीं डाला, जैसे उसका नाम खराब हुए। हमारी कीर्ति होवे। एक- एक चीज़ में, एक-एक बात में तुम्हारे को कीर्ति की इच्छा है कि नहीं ? मेरा नाम निकले। तो आज से अपना नाम भूलना भगवान का नाम रखना। भई भगवान का नाम निकले। कोई बोले भी तुमने तो बहुत अच्छी चीज़ बनाई है, तुमने तो बहुत अच्छा बोला, बहुत अच्छा किया, तुम तो बहुत अच्छा है। बोला किसने किया ? किसने बोला ? किसने खाया ? किसने बनाया ? तुम तो बहुत अच्छा कमाते हैं, किसने कमाया ? कोई ऐसी चीज है जो भगवान के हुकुम के सिवाय तुमको मिल जाए ? भगवान का हुकुम ना होए, तुम्हारी एक भाजी भी पक सकती है भगवान के हुकुम के सिवाय ?

जब भाजी भी अच्छी बनती है क्योंकि तुम एकाग्र था, क्योंकि परमात्मा को रखा आगे, अपने को भुलाया था तभी कोई एक चीज़ भी अच्छी बनती है तुम्हारी । तुम्हारा मन एकाग्र नहीं होवे, दूसरी - दूसरी तरफ़ होवे तो तुम्हारा उसी दिन खाना भी नहीं बनेगा अच्छा। तुम्हारे को नुकसान हो जाएगा, कोई भी अच्छी चीज़ नहीं बनेगी। तुम कोई भी बात में success नहीं होएगा जब भगवान को आगे नहीं रखेगा और अपने को भूलाएगा नहीं। सब बात में अपने को भुलाना पड़ता है, पूरा एकाग्रता से कोई भी काम करेगा और भगवान को आगे, उस समय मैं कुछ नहीं करने वाला हूं, सब कुछ ईश्वर ही कराता है, ईश्वर ही ले के आता है। हम बोल भी नहीं सकते हैं, बना भी नहीं सकते हैं, खा भी नहीं सकते हैं, हमारे हाथ में तो कुछ नहीं है। हमारी प्रशंसा होवे, इसकी क्यों हुई ? हमारा नाम निकले, इसका क्यों निकला ? ये आगे कैसे हो गया, मैं पीछे पड़ गया, अरे हमारा भाग्य अच्छा नहीं है, इसका भाग्य अच्छा है। भई ये तो इकट्ठे बैठे हैं, हम तो दूर रहते हैं, इसका भाग्य बहुत अच्छा है।

तुम तो बड़ा बेवकूफ़ है! इकट्ठा कौन है और दूर कौन है ? गुरु से नज़दीक होना है, दूर कौन है ? जो आत्मा में है, वह गुरु से नज़दीक है चाहे कहां भी है। करोड़ कोस हमारे से परे है तो भी हम उसको याद है, वो हमको याद है कि फलानी यहां बैठी है। कोई सामने बैठा है लेकिन अंदर उसके कोई दूसरा बैठा है, वो हमारे साथ कैसे हो सकती है ? अंदर उसके मन बैठा है, मन जिन्न के साथ बैठा है, वो हमारे साथ कैसे बैठा है ? तुम तो समझता है यह सब साथ बैठे हैं, साथ कैसे बैठे हैं ? पता नहीं उसके अंदर में क्या क्या संसार भरा पड़ा है, वो कैसे गुरु के साथ कैसे बैठा है। बहुत दूर बैठा है। एक ख्याल भी तुम्हारे अंदर में है, तो तुम भगवान से बहुत दूर है। और कोई कहीं भी है लेकिन ख्यालों से खाली है, अपनी link परमात्मा से लगा के बैठा है, सब तरफ़ गुरु ही गुरु देखता है, भगवान ही भगवान देखता है, ये सब मेरा साईंया है। सबको साईं समझ के झुकता है, मरता है, उनको प्यार करता है, सर्व में पेखे भगवान तो जैसे भगवान से मिला पड़ा है।

क्यूंकि अंतर आत्म जे मिले, मिलिया कहिए सोए। मिले मिलया ना मिले, जे मिले मिलया होए। बाहर से जो मिला, बाहर से शरीर से जो मिला वो नहीं मिला। लेकिन अंतर आत्म जे मिले। तुम्हारी आत्मा, भगवान की आत्मा एक हो जाए। तुम्हारा ख्याल, भगवान का ख्याल एक हो जाए। तुम्हारा ज्ञान, भगवान का ज्ञान एक, उसकी समझ तुम्हारी समझ एक। दो समझ नहीं, फिर झगड़ा ही नहीं है। तुम जीव है, वो ब्रह्म है - तो जीव - ब्रह्म का झगड़ा चलेगा।

जब तक तुम जीव भाव में है, तब तक तुम जलेगा, सड़ेगा, हसद, साड़, खार, द्वैत, द्वेष सब होएगा। क्यूंकि जीव भाव में तो यह स्वभाव चलेगा। कोई जीव भाव में रहकर बोले मेरे को हसद नहीं होवे, साड़ नहीं होवे, द्वैत नहीं होवे, द्वेष नहीं होवे, कैसा होवेगा ? जब तुम अपने को भी आत्मा, दूसरे को भी आत्मा समझोगे, सबके सुख के लिए तुम जीओ, तभी खुश हो जाओ कि अरे इधर भी मैं हूं, इधर भी मैं ही तो हूं, ये मेरा ही रूप है, जैसे मैं ही बैठा हूं उधर, सब तरफ मैं ही मैं हूं। प्रशंसा किसकी हुई ? मेरी हुई। ये खुश मतलब मैं खुश। ये चढ़ गया माना मैं चढ़ गया। सब चीज़ में मैं ही हूं, सब बात में मैं हूं, सब मनुष्य में मैं हूं। मैं ही तो हूं। जब ऐसा दूसरे को देखकर बिल्कुल हृदय तुम्हारा ठंडा होगा, तभी jealousy हमेशा के लिए चली जाएगी। कि दूसरा है ही नहीं जिसके साथ मैं jealousy करूं। सब भगवान ही भगवान है। ऐसा देखने वाला कभी भी jealousy नहीं कर सकता है। ये द्वैत चला जाएगा, तभी jealousy जाएगी। जब मैं ही तो हूं, मैं ही तो हूं कृष्ण भगवान जैसा ज्ञान जिसको पक्का होएगा, वो किसी के साथ भी jealousy नहीं करेगा। वो बोलेगा सब मैं हूं, सब मेरा ही रूप है। सब में मैं बैठा हूं।

हमारे को ये देना। दूसरे से मांगेगा " napkin तुम्हारे पास है, मैंने लाया ही नहीं है आज, napkin तो देना"। दूसरे का चप्पल पहन के चले जाता है। भई क्यों चला गया ? मेरा चप्पल लभा ही नहीं, दूसरे का मैं पहन गई। अरे वो तो बहुत बेचारी ढूंढ रही थी।

तुमने किधर रखा ? जिस जगह से उठाया था, उस जगह से कोई चीज़ रखी, मैंने वहां चीज़ धर रखी, पता नहीं किसने उठाई। भई common sense है, कहां रखी जाती है। चीज़ जहां से उठाई, तहां रखी ? किसी का कंघा ले के तुम ऐसा use करना, वो बैठ के ढूंढती है मेरा कंघा कहां है। तुम्हारा बाल कंघे में ही पड़ा है, तुमने दूसरे का कंघा ले लिया। दूसरे का साबुन लेना, दूसरे का सर्फ लेना, दूसरे की चीज़ लेना। अपने पैसे से खर्च नहीं करना, दूसरे का पैसा खर्च हुआ तो भई ठीक ही है। दूसरे ने चीज़ हमको दिया तो भी ठीक है, हम क्यों करें ? कंजूसपनी करना, दूसरे की चीज़ use करना। सब जो है वो common sense में बात आ गई। कैसे चलना ? शांति से चलना, सीढ़ी कैसे चढ़ना, सीढ़ी कैसे उतरना। किसी को तकलीफ़ नहीं होवे, बत्ती जलाना, आधी रात को उठके बत्ती जलाना जोर से। भई दूसरे की भले नींद फिटे, सुबह को उठ के बत्तियां जलाना, हरिओम हरिओम वाक्य से कहना। भले सबकी नींद फिटे, मैं तो भई सबकी गुरयानी हूं ना। मैं हरिओम ज़रूर करूंगी चार बजे उठके। तो कोई भी बात तुम करता है दूसरे को तकलीफ़ देने के लिए, ये common sense नहीं है। कैसे उठें, कैसे बैठें - ज्ञानी का हर चीज़, हर बात, हर कदम, हर action शोभा देने का है, शोभा देता है। और तुम जैसे चलते है, जंगली लोक चलता है जैसे। तकड़ा - तकड़ा चलना, या बहुत धीरे चलना या बहुत आवाज़ से चलना जो दूसरे की नींद फिटे। किसी का भी तुम ख्याल नहीं करता है दूसरे का। पूरा खाना, पूरा पीना, दूसरे के लिए चीज़ रख के पीछे खाना। ऐसा नहीं कि दूसरे की भाजी अभी बची नहीं है, तुम खा जाता है, दूसरे का फुल्का बचा ही नहीं तुम खा जाता है। भई मेरे को क्या पता कि दूसरे के लिए रखा है कि नहीं रखा है। भई Common sense चलाया ? 8-8 आदमी घर में है, कितनों ने खाया, कितनों ने नहीं खाया, किस के लिए रखा, किसके लिए नहीं रखा, कितना चीज़ बनानी चाहिए, कितनी नहीं बनानी चाहिए, सबके लिए कौन सी चीज़ बनानी चाहिए, सबको क्या - क्या पसंद है, दूसरे को क्या पसंद है। ये common sense में सब बातें आ गईं। उसमें बोलना ही नहीं पड़ता है, मौन में घर चलता है, शांत में, झगड़ा ही नहीं।

दूसरा बात करता है, तुम अकेले में चले जाओगे, दूसरा किसी से भी बात करता है, मैं कैसे बैठूं ? मैं क्यूं सुनूं ? तुम दरवाज़े के पीछे भी बैठ के सुनेगा, ये क्या बात करता है, मेरी तो नहीं करता है, तेरी तो नहीं करता है, इसकी तो नहीं करता है। तो एक शब्द सुनेगा, तो पता नहीं क्या-क्या तुम अंदर में ही बोल के बैठेगा शायद मेरे लिए ही बोला होगा। अरे तेरी बात भी नहीं की, तू है कहां ? सब जो आदतें, गिला, चुगली, चोरी, सुरखुरा होना, किसी की निंदा करना, किसी की बातें करना, बातें बना के नीचे ऊपर बताना, वधाव करना, छोटी बात को बड़ी करना, इसको ये करना, लंबी चौड़ी करना - सब जो है वो common sense में बात आ गई।

जब तुम्हारा स्वभाव ज्ञान का होएगा, तभी common sense आएगा। दुनिया में तो किसी को भी common sense नहीं है। गुरु common sense सिखाता है। वो उठा कैसे, बैठा कैसे, खाया कैसे, देखा कैसे, उसका ख्याल किया, ऐसा किया - सब बात गुरु सिखाता है। दूसरे का कंबल कैसे फैला, दूसरे की चीज़ क्यों उठाई, ये चीज़ कहां से उठाई, फिर किधर रखी, फिर बात पूछी क्यों किसी से। आप अपने को बोलते क्या हैं, क्यों बोला। थोड़ी थोड़ी बात बाद लंबी बात क्यूं किया। एक digression क्यों किया, एक इशारे पर चलो। बोलने का ज़रूरत नहीं है किसी से। ज्ञानी का घर इशारे से चलना चाहिए, बोलना, बक - बक करना, बात करना, तुम ऐसा करो, मैं ऐसा करता हूं, तुमने ऐसा क्यों किया, तुमने ऐसा क्यों नहीं खाया, तुम कभी खाएगा , तुमने क्यों दूध नहीं पिया, तुमने ऐसा नहीं किया, ऐसा नहीं किया। सारा दिन बकवास में वो अज्ञानी की तरह चले, वो ज्ञानी का घर नहीं है। Common sense सब 24 ही घंटा सब अपनी common sense में चले। सब उठना, बैठना, खाना, पीना सब जो है वो पूरा- पूरा, ठीक - ठीक चले। तो उसके घर में कभी भी विक्षेप नहीं आएगा मन में। विक्षेप्ता को जाने के लिए common sense होना चाहिए, नहीं तो दूसरा भी विक्षेप्ता में, तुम भी विक्षेप्ता में। ये common sense भी जो गुरु के घर में आ के हम सीखते हैं कि कैसा करना चाहिए।

तुम्हारी किसी से नफ़रत है, वो तुम्हारे को 24 घंटा याद है। या मोह वाला, या द्वेष वाला 24 घंटा याद आता है। तो इतना ही time भगवान दूर हो गया, आनंद और शांति दूर हो गई, इतना ही time mind में गए। फलानी ने ऐसा क्यों किया मेरे से। अब वो याद आएगा कि भगवान याद आएगा ? फिर फलाना फलानी याद आ गया, भगवान भूल गया। एक ख्याल भी द्वैत का, नफ़रत का तुमको सारा ही मुक्ति खल्लास हो जाएगी, तुम्हारा ध्यान खल्लास हो जाएगा। धर्म अर्थ काम मोक्ष सब चला गया एक नफ़रत से। और एक से नफ़रत किया माना भगवान से किया। ऐसा नहीं समझना कि किसी मनुष्य से तुम करेगा। बिल्ली कुत्ते को तुम नफ़रत करेगा तो भी भगवान से किया क्यूंकि भगवान उधर है। सबके भीतर भगवान है।

एक दिन रुक्मणी ने राधा को गरम गरम दूध पिलाया जैसे वो जल जाए। तो कृष्ण के पांव में आ के छाले पड़े। तो रुक्मणी ने बोला कृष्ण भगवान तुम्हारे पांव में छाले पड़ गए क्या बात है ? बोला बहुत ही गरम चीज़ लग गई है। बोला कौनसी ? बोला तुम ही समझो। बोला हमने तो गरमा गरम दूध राधा को पिलाया था, जैसे वो जल जाए। बोला नहीं उसके भीतर मैं बैठा हूं। उसके दिल में मैं बैठा था, हृदय में मैं बैठा था, मैं ही जल गया। तो तुम जिससे नफ़रत करता है, उधर भगवान अंदर बैठा है। ऐसे भगवान से नफ़रत किया। तो भगवान तुम्हारे अंदर शांति कैसे भेजेगा। तुम भगवान से नफ़रत करेगा तो शांति कैसे आएगी ?

अरे मनुष्य तो क्या, हैवान तो क्या, एक चीज़ से, एक तृण से भी नफ़रत करेगा, तृण भी उड़ के तुम्हारी आंख में पड़ेगा, तुम्हारी आंख निकल जाएगी। एक कख भी ना निंद एक कख भी वही वथ। एक तृण को भी नहीं नफ़रत करो, किसी से भी नहीं बोलो, कुछ बोलो भी नहीं किसी से खराब। किसी के लिए बोलना, किसी के लिए सोचना ये सब कर्म बनाना है। उसका नतीजा देखना पड़ेगा।

इसलिए सोच के, समझ के किसी के लिए बात करो, किसी के लिए सोचो। कोई संकल्प विकल्प भी खराब नहीं करो किसी के लिए। ये नफ़रत का अवगुण इतना बड़ा है जो सब बीमारियां नफ़रत से, hate से होती हैं। Blood pressure चढ़ जाता है, तुम जल जाएगा, सब मत्था, मत्थे से पांव तक सब जल के भस्म हो जाएगा तुम्हारा बदन – खाली किसी से नफ़रत होए। फलाने ने मेरे से ऐसा किया, फलाना ऐसा है, फलाना ऐसा तुम भगवान से दूर हो गया। भई ये जो संबंध हैं तुम्हारे हसद साड़ के कूड़े हैं, जैसे कूड़ा नहीं होता है, जैसे जलन का कूड़ा होता है, उसमें जा के तुम जलता है। हसद, साड़,वैर,खार ये कूड़ा है एक। आग का कूड़ा, उस में तुम जल जाते हैं। तो बड़े में बड़ा जो दुश्मन है तुम्हारा, वो है hate, नफ़रत। Hate none! किसी को भी तुम नफ़रत नहीं करो चाहे वो वैश्या है, बदमाश है, चाहे पापी है, चाहे गुंडा है। कोई भी है, वो भगवान ही है। वो आज अपने को change करे, आज भगवान हो सकता है। तुम्हारे से भी ऊपर चढ़ सकता है, तो तुम नफ़रत क्यों करता है?

पाप को धिक्कारो, पापी को नहीं। क्रोध को धिक्कारो, क्रोधी को नहीं। शराब को धिक्कारो, शराबी को नहीं, वैश्यापने को धिक्कारो, वैश्या को नहीं। वैश्या तो आत्मा है ये मन है उसी का, सबके अंदर मन बैठा है शैतान ये शराब पिलाता है, ये wrong रास्ते पर ले के जाता है। उसका दोष नहीं है, उसका mind ऐसा है, उसकी माया है। क्योंकि उसको गुरु नहीं मिला है। जिसको गुरु मिल गया वो right रास्ते पर चलेगा। जिसको नहीं मिला है, वो बेचारा wrong रास्ते पर चल रहा है, पूरा अपने को control नहीं किया है। उसका दोष नहीं है, नफ़रत काहे की ? सबके लिए प्रेम। पापी, पुणी आखन नाहिं। कहने से कोई पापी, पुणी नहीं हो गया है। उसके अंदर क्या है वो तो भगवान जानता है। वैश्या के अंदर बहुत प्रेम है, तो भी वो वैश्यावृत्ति में जाती है, है अंदर प्रेम। तो जभी संत उसको मिलेगा, एक दिन में जो है उसको ऐसा बना देगा, भगवान बना सकता है। तुम कैसे समझेंगे ये खराब है ?

पांच विकार तुम्हारे में भी है, पांच विकार वैश्या में हैं। वैश्या तुम्हारे से खराब है क्या ? जो तुम पतिव्रता है, वो वैश्या है। पांच ही विकार हैं तुमको। तो जिसने पांच विकार को जीता, वो भगवान है। जो पांच विकार को नहीं जीता है, वो तो सब ही वैश्याएं है। जिसका मन माया में है, वो वैश्या ही है। चाहे पैसे में है, चाहे धन में है, चाहे स्त्री में है या चाहे बेटे में, चाहे पुरुष में है, चाहे कहां भी है, तो भी वैश्या ही है। क्योंकि भगवान के सिवाए दूसरा देखना वैश्यापना है। अव्यभिचारी भक्ति योग में जो नहीं है, वो व्यभिचारी भक्त है। माना भगवान के सिवाय दूसरा देखना माना व्यभिचार करना। चाहे कुछ भी देखो - हीरा देखो, सौन देखो, कपड़ा देखो - वैश्या हो। क्योंकि नज़र ही तुम्हारी जो है पदार्थ पर है, नजर ही तुम्हारी दूसरे पर है, तो ये ही वैश्यावृत्ति है। जो भगवान के सिवाय दूसरा कुछ नहीं देखता है, वो ही भगवान हो जाता है। भगवान बोलता है कि सब मैं ही हूं, तो किससे नफ़रत, किससे मोह, कौन प्रिय है, कौन अप्रिय है। कौन सुख देने वाला है, कौन दुख देने वाला है ? दोनों ही भगवान हैं। दोनों को जब भगवान देखेगा तभी तुम छूटेगा माया से। नहीं तो राग- द्वेष तो माया ही है। तुम किसी से राग, किसी से द्वेष रखता है। जब किसी से भी कोई संबंध नहीं होएगा शरीर का, तो आत्मा का संबंध ही रहेगा। तभी खुशी आएगी, तभी आनंद मिलेगा। सब को देख के आंखों में तुम हंसेगा, कूदेगा - भई ये भी भगवान, ये भी भगवान। प्रेम अंदर से उमड़ आएगा। चाहे कोई तुम्हारे को आ के कीली से भी ठोके, मारे, उसको भी तुम प्रेम से देखो ये भगवान है। जैसा भी कोई ज़ुल्म आ के करे तुम पे, तुम बोलो,नहीं ये भगवान है। ये कभी नहीं कुछ कर सकता है। कोई curse करे या तुम्हारे को पीठ लगाए, जाओ तुम्हारे साथ ऐसा होगा, ऐसा होगा, बोलो नहीं ये भगवान है। कभी नहीं ऐसा हो सकता है। इसने जो कर्म किया हुआ है, तुम्हारे शरीर ने, वो भोगेगा, बाकी दूसरा कोई नहीं कुछ कर सकता है। तो ज्ञानी नहीं भोगता है, नहीं करता है। नहीं दूसरे को करता समझता है। कोई भी नुकसान पुहंचाने वाला उसको है ही नहीं, तो नफ़रत किस से करे ? तुमने तो सलाह दिया, तुमने ही तो बोला ऐसा करो, अभी देखो नुकसान हो गया।

तुम बच्चे को बोलेंगे तुम ऐसा दुकान खोलना, तुम ऐसा करना, तुम office में जाना, तुम ये करना, तुम वो करना। तुम क्यों सलाह देता है ? कोई भी सलाह देगा, नुकसान पड़ेगा तो तुमको आ के बोलेगा, इसलिए बोलना बंद करो, मौन रखो घर में। ऐसा क्यों किया, सारा दिन बोल - बोल, टुक - टुक, घी क्यों गिराया, ऐसा सफ़ाई क्यों नहीं किया, तुम मर जाएगी तो क्या करेगी ? अभी मर के चलो तो अच्छा है। मरना सीखो, जीना नहीं सीखो। बातें करेंगे, झगड़ा बनेगा। जो जो ज्यासती बात करता है, उसी से ही झगड़ा होता है। झगड़ा कहां से शुरू हुआ ? ज्यासती बात करने से। पर एक बोले दूसरा मौन रखे तो झगड़ा होएगा नहीं। इसके लिए बात ऐसी करो ही नहीं जो पछताना पड़े। ऐसी बात करो जो सबको पसंद आवे। आत्मा की बात करो, भगवान की बात करो, जवाब अच्छा दियो। धीरज से दियो, मुस्कुरा कर दियो। कोई भी कैसा भी बात करे, तुम मुस्कुरा कर बोलो " हां ठीक है, मेरी भूल होएगी, हम अपने को सुधारेंगे, क्या हुआ ? ऐसा नहीं बोलता है हमारी गलती, खराब बोल देगा तो बहुत पछताना पड़ेगा। एक एक को भगवान देख के झुकेगा नहीं, मरेगा नहीं, धीरज से नहीं बोलेगा, या कुछ भी बोलेगा तुम बहुत दुखी होएगा। एक शब्द भी wrong बोल के तुमको नींद नहीं आएगी। और तुम आत्मा का शब्द बोलेगा, ओम शब्द बोलेगा, भगवान की बातें करेगा, ज्ञान की बातें करेगा दूसरे से, नम्रता से बात करेगा तुम को खुशी होएगी। अहंकार से बात करेगा तुमको बहुत दुख होएगा उसी से क्योंकि अहंकारी कभी भी सो नहीं सकता है खुशी से। अहंकार एक सांप है, जो तुमको बड़ी - बड़ी सांप काटता है, तुमको ही काटेगा। अहंकार से उठना, बैठना, खाना, पीना, वैर विरोध, मैं हूं मैं हूं - अरे मैं कुछ नाहीं, मैं कुछ नाहीं, मैं कुछ नहीं हूं। सारा दिन बोलो “मैं ना”। जो मैं ना समझता है, वो क्या बोलेगा ? सारा दिन क्या बोलेगा? ? ऐसी बात करेगा जो दूसरे को भी शक्ति आवे, अपने को भी शक्ति आवे। किसी को भी टोक नहीं, ताना नहीं, ऐसा नहीं, सीधा नहीं, टेढ़ा नहीं। सीधा, plain । अंदर की सफाई होनी चाहिए बहुत। भई ये भगवान है। ऐसा नहीं मेरे वचन से कोई गिर जाए, मेरे वचन किसी को खराब लगे, मेरा वचन किसी को तीखा लगे।

इतना मरो, इतना झुको, इतना मीठा बोलो जो सब तुम्हारे प्रेम में वस हो जाएं, सांप भी वस हो जाए। सांप जैसा आदमी होवे ना, तुम्हारा आ के पांव चूमे एक दिन। भई मैंने तो क्या भी किया, तुमने तो बहुत अच्छी तरह से मेरे से treat किया। तो जैसे ज्ञानी है ना, हमेशा झुकता रहता है, प्यार करता रहता है। क्या भी तुम करेगा, कैसे भी तुम चलेगा, उसको पता है ये मन है इसका बदमाश। फिर वो झुकेगा, कभी नीचे, कभी ऊपर, कैसे भी उसके मन को वस कर देता है। तो सांप को मुरली बजाओगे, वो वस हो जाएगा। तुम भी आत्मा की मुरली बजाओ, वस हो जाएगा। कैसा भी आदमी होएगा, तुम फिर भगवान की बात करो। बाकी ज्यासती बोलने से कुछ भी मतलब नहीं है सिद्ध। ज्यासती बोलने से झगड़ा ही होएगा, शांति नहीं आएगी।

मौन में है सौन, और बोलना है चाँदी। मौन रख के देखो, कितना सब खुश हो जाता है। और जो ज्यासती बोलता है, उसकी निशानी है कभी कुछ निकल आएगा, कभी कुछ ना कुछ बोल देगा, कभी wrong बोल देगा, क्यों बोला ? संत ने खाली रानी को बोला तुमको बेटा होएगा, तो भी उसको जन्म मरन में जाना पड़ा। इतना क्यों बोला ? शास्त्रों में भी लिखा है कि एक शब्द भी ज्यासती ना बोलो। सोच सोच के बोलो मै किससे बोलता हूं। पहले सामने भगवान देखो पीछे बोलो। अगर भगवान नहीं देखो, तो किसी को बोलो भी नहीं।

है ही भगवान। तभी बोलना शुरू करो। ऐसा तो अच्छा बोलेगा कि बोलेगा ये तो साक्षात भगवान है हमारे लिए। अच्छा बोलना सीख जाएगा तुम। भगवान से हम कैसे बोलेंगे, कैसे treat करेंगे। जहां तहां है ही भगवान। तो तुम्हारे से कोई भूल नहीं होगी जो तुमको बाद में पछताना पड़े, या माफ़ी लेना पड़े। एक शब्द भी ऐसा नहीं निकाल सकता है ज़ुबान से, इतना control होना चाहिए, क्योंकि अंदर में जिसके आत्मा है, परमात्मा बैठा है, जो जहां तहां भगवान देखेगा वो ऐसा एक भी शब्द सारे दिन में नहीं बोलेगा। और समझ के सोच के ऐसा बोलेगा जो सबको खुशी होवे सबको आनंद आ जाए। ऐसा बोलना शुरू करो।

सच्चा गुरु वो है जो तुमको ऐसा feel कराये कि तुमको अभी कुछ सीखना बाकी है। कोई ऐसी चीज़ है जो तुमने नहीं सीखी है। आत्मा है जो तुमने नहीं समझी है, बाकी तुम होशियार है। सच्चा गुरु आ के तुमको marks नहीं देगा , बोलेगा,नहीं तुम fail है। कितनी भी होशियारी है तुमको तो भी तुम fail है क्योंकि तुमने आत्मा को नहीं जाना। तो तुम्हारे अंदर उत्कंठा होएगी कि ये आत्मा क्या होती है वो तो मैंने नहीं जानी है। भगवान क्या होता है, मैंने तो पाया नहीं है, ज्ञान क्या होता है, ब्रह्मविद्या क्या होती है। तुम इधर नई- नई बात सुनते हैं ना रोज़, पहले पता थी ? बाकी तो सब आता था – खाना बनाना , किसी के मर्द को पिटा के आना,किसी का घर फिटा के आना। निंदा चुगली में सब होशियार थे, खरीददारी बिक्री में पर आत्मा खाली नहीं था जाना। Modern world does not know about Aatma. आजकल की Fashionable दुनिया में खाली आत्मा का नहीं पता, बाकी सब कुछ पता है। तो गुरु ऐसा चाहिए जो तुम्हारे अंदर में ये प्यास जगाए कि तुमको कुछ सीखना है। इस दुनिया में आया है, क्या सीखना है तुमको ? यही सीखना है कैसे मन को मोड़ना है, आत्मा में कैसे जोड़ें, ये बड़ी में बड़ी विद्या है। वो सीखने के लिए ही तुम इधर आता है। मन मुड़ा ही नहीं था, मन मरा ही नहीं था। वो जिंदा था, सबका मन जिंदा ही होता है जो आता है । अभी इधर आ के पता चलता है ना कि मन ऐसा है, मन ऐसा है। कितना बड़ा मन है, कितना बड़ा संसार है। थोड़ी थोड़ी बात में मन क्या करता है अंदर, कितनी बदमाशी करता है, किधर- किधर चला जाता है, ऐसा हवा से भी तेज़ है। मन की पहचान देता है गुरु, और आत्मा की पहचान देता है। ये दोनों नई बात है तुम्हारे सीखने की। बाकी तो सब सीखें पढ़े हैं तुम,बड़े होशियार है। और इधर होशियारी ये है की मन को मोड़ के देखो, आत्मा में जोड़ के देखो। जहां जहां ये मन जाए, हे अर्जुन, तू सबसे मन निकाल के मुझ आत्मा में रख। यही इधर का अभ्यास है जो तुम्हें सीखने का है। कि मैं आत्मा हूं,मैं परमात्मा हूं, और मन तुम जोत स्वरूप है ये सब तुम्हें इधर जान पड़ती है, ये ही होशियार teacher है, सच्चा teacher है गुरु जो हमको मन की विद्या सुनाता है, मन मारने की विद्या कैसी है।

मन मारने की औषधि, दवाई वो गुरु के पास है, जो किसी भी पास नहीं है। और सच्ची शांति वहीं से ऐसी बात सुनने से मिलती है।

मन से परे समझेंगे, भई ये मन है। ब्रह्मज्ञानी सदा ही सावधान, सावधान, सावधान। मन को आने ही नहीं देना। ऐसा तुम सावधान हो के रहो जो दूर से ही समझो मन है , एकदम निकाल दिया तुमने उसको। ख़ाली देखते रहो। मन मैं तुमको देख रहा हूं। तुम आ रहा है, तुम मस्ती कर रहा है, तुम इधर उधर भाग रहा है, देख रहा हूं मैं। ख़ाली चोर को पहचाना, चोर भाग गया। चोर को आने नहीं दियो, खाली पहचानो। मन को भी पहचानो। बोल मन को मारने की ज़रूरत नहीं है, खाली देखो और पहचानो - चला जाएगा। ये मन है। तुम तो मन का रूप बन जाते हैं ना। वो मन को अलग करके देखता है। उसके वस नहीं होता है। तुम उसके वस हो जाता है क्योंकि तुम्हें उसके आने का पता ही नहीं चलता है, कैसे आया । तुम्हारे से कर्म भी करा के जाएगा। और ज्ञानी ख़ाली सामने देखता है कि आया है, उसी से mix नहीं होता है, उसी से कर्म नहीं बनाता है। वो जैसा मन बोलता है, वैसा करता नहीं है। हमेशा मन से उल्टा चलता है। जो मन बोलता है, वैसा करता नहीं है। जैसी जैसी देखता है मन की बात, उसी से उल्टा चलता है। मैं तुम्हारे जैसा बेवकूफ़ नहीं हूं, मुझे गुरु मिल गया है। मैंने पहचान लिया तुम चोर है, तुम आएगा चोरी करके जाएगा, आत्म धन हमारा ले के जाएगा, हमारा समय गंवा के जाएगा, तपस्या भंग करके जाएगा ऐसा यह मन है। इसीलिए घड़ी ना बिसरूं राम को, ऐसी भक्ति में बैठा है। तो ऐसा ब्रह्मज्ञानी अपने ब्रह्म में रहता है। वैसे तो मेरे को ज्ञान हो गया तो मस्ती किया, चर्चा किया , खाया तो क्या, पीया तो क्या, घूमा तो क्या , बेपरवाही से चला तो क्या, बेपरवाह फकीरी । दिन - ब- दिन और fast और control। मोटर चलाता है, तो ध्यान देता है - वो जो ब्रेक के ऊपर उसका पांव है। कितनी भी पंप करे, कितना भी ऐसा- ऐसा देखा पर पांव है ब्रेक के ऊपर। थोड़ी ही साइकिल आयी, एकदम ब्रेक, थोड़ा ही आदमी आया, एकदम ब्रेक। तो ब्रेक के ऊपर कितना ध्यान है मोटर वाले का। ज़बरदस्त ध्यान है।

तो गाड़ी उसके हाथ में है। जो गाड़ी की ब्रेक हाथ में ही नहीं है, उसका तो पक्का ही पक्का accident होएगा। हमारे अंदर ब्रेक बहुत होनी चाहिए। ख्याल आए एकदम ब्रेक, No! इधर नहीं जाने का है, ये काम नहीं करने का है, ये wrong है, ये मेरे को ख्याल नहीं आना चाहिए, एकदम cut करके ब्रेक दी कैसा भी खयाल आए। Controlling power तुम्हारे अंदर होना चाहिए। कोई भी एकदम शब्द बोलता है , शांत कर दियो, एकदम मौन कर दियो। तुम एकदम जवाब दे के बैठते हैं। मन आया तुम उसी के साथ बह गया, उसी के साथ कर्म किया तो ये controlling power नहीं है। मन आता है, किसी को भी आ सकता है। ज्ञानी के पास भी मन है, मन मर थोड़ी गया है, आता है तो क्या हुआ ? लेकिन मन को पहचाना कि ये wrong खयाल है।इस से मैं मिलावट नहीं हो जाऊं। ज्ञानी को कभी देखा है तुमने, कोई हठ, कोई अहंकार कि मैं नहीं उठूंगा, मैं नहीं खाऊंगा ,मैं जाता हूं, मैं आता हूं, मैं ऐसा करता हूं कभी देखा है ? पूरा पूरा control उसके हाथों में है। कोई भी बोले उठो, हां ठीक है। बैठो, हां ठीक है। चलो, हां ठीक है जैसे बोलो। क्योंकि उसके अंदर कोई इच्छा नहीं है। अज्ञानी के अंदर इच्छा है, तो इच्छा hurt करती है, इच्छा दुखी करती है, हठ कराती है, अहंकार में लाती है। इच्छा की वजह से ही मनुष्य दुखी, सुखी, होता है, बेवकूफों, अज्ञान की तरह चलता है। वो भी इच्छा उलझाती है अंदर उसको, गलियों में घूमाती है, धक्का खिलाती है। आत्मा से दूर कर देती है। एक भी इच्छा है अज्ञान, बाकी बड़े में बड़ा अज्ञान है इच्छा। तभी दादाजी ने बोला, इच्छा छोड़ो, वैराग्य लो। और हर तरफ़ भगवान देखो बस, बाकी कुछ नहीं करना है। ज्ञान इस तीन बात में है : पहले अपनी इच्छा को देखो, मेरी इच्छा कौन सी है जो मेरे को दुख पुहंचा रही है। इच्छा मातरम् अविद्य। जब भी देखेगा मन इच्छा करता है, एकदम उसी से उल्टा चलो। ये इच्छा तुम्हारी पूरी नहीं करूंगा। ये इच्छा मेरे में बनती नहीं है। मैं आत्मा हूं, मेरे में इच्छा होनी ही नहीं चाहिए।

मेरे को कोई भी बोले आधी रात को कि उठो, इधर सो जो, नीचे जाओ - ठीक है। तुम कहां भी जा सकते है, कहां भी सो सकते हैं। किसी के साथ भी रह सकते हैं, नए के साथ भी, पुराने के साथ भी और सब से एक जैसा प्यार है। तुमको खास किसी से मज़ा आएगा, उसके साथ जाओ। नहीं, मैं तो उसके साथ जाऊंगी, क्योंकि उसके साथ लगाव है। लेकिन तुमको रोज़ नए से प्रेम करना चाहिए, पुराने को छोड़ के नित नया, नित नया। क्योंकि ये सब हमारा रूप है, उसी से और मज़ा आएगा, और विशाल, बड़े दिल वाला हो जाएगा। सबके लिए प्यार माना भगवान हो गया है। और थोड़े के लिए प्यार माना भगवान नहीं। एक से मज़ा आता, एक से नहीं।

एक के साथ रस आता है, एक के साथ नहीं। नहीं ! तुम सबको रस दियो। तुम नए-नए से बात करो, प्यार करो,बुलाओ, खाओ, बोलो मैं चलती हूं तुम्हें घुमाने के लिए, प्यार की बातें करो, उसको खज़ाना दियो, निष्कामी बनो। तुम अच्छी तरह से देने वाला बनो, जो ज्ञान तुम्हारे पास है, सबको को जा के दियो, अपना अनुभव सुनाओ कि हम कहां खड़े हैं। अपनी life सुनाओ, शादी में क्या है, बच्चे में क्या है, दुनिया में क्या देखा है। कौन सा दुख - सुख है दुनिया में, तुम अपना अनुभव सुनाओ, तुम होशियार हो जाएगा। अंदर वैराग पक्का होएगा जब दूसरे का दुख - सुख सुनेगा। बाकी एक से ख़ाली लगन है ये तो मेरा गुरु है, ये तो मेरी गुरयानी है, ये तो मेरा शिष्य है। उसी से ही सारा दिन खाओगे, पियोगे, चलो इधर चलें - उसी में ही रग जो है उधर जाती। कभी भी उससे निकल के ऐसा सर्व में पेखे भगवान नहीं होगे। तब गुरु आ के, अंदर की यह जो तार है मोह की इसको आ के तोड़ता है। देखो सबसे मज़ा आता है या नहीं आता है । जहां जहां देखेगा इसकी वृत्ति जाती है, इसका खयाल जाता है, वहां काटेगा। ज्यासती क्यों, कमती क्यों ? - एक रस हो जाओ। राम एक ही है तो तुमको सबसे एक जैसा प्यार होना चाहिए। । ऐसा स्वभाव बनाता रहो अपना। तो मन जहां- जहां जाए, उसी से काट के बोलो क्यों इधर क्यों? इसको प्यार करता है इसको क्यों नहीं करता है ?

इससे बैठा है, इससे क्यों नहीं बैठता ? सब में एक ही आत्मा है। तुम लेने वाला है कि देने वाला है? लेने वाला है तो फकीर है, सारी उम्र लेता रहेगा थकेगा ही नहीं। फकीर को कभी तुमने राजा बनते हुए देखा है ? चाहे 40 हज़ार उसकी जेब में पड़ा है, तो भी फकीर फकीर ही रहेगा, राजा नहीं बनेगा। क्योंकि तुमको आदत है। तो तुम भी जब भी लेना शुरू करता है, तो लेता ही रहेगा। गुरु बोलेगा अभी लेना बंद करो, देना शुरू करो। बोलेगा नहीं जी, मेरा तो उसके साथ बहुत प्यार है, मैं उसको क्यों छोड़ूं ? मेरा तो प्रेम है। प्रेम कैसा है ? तुम उसी से लेता है, दे कहां रहा है ? दूसरों को प्यार करेगा तो देगा और लेने वाला जो है वो हमेशा फ़कीर रहेगा। तो जहां जहां तुम्हारी रग, मोह, आसक्ति जाती है, बच्चे में, चाहे मर्द में, चाहे सत्संगी में, चाहे किसी में भी, फिर ज्यासती कमती क्यों जब भगवान एक ही है। तो जहां तहां एक ही देखेगा तो सर्व से प्यार हो जाएगा।

ये चीज़ तुम्हारे अंदर पक्की होनी चाहिए। ये नहीं बोलना कि ऐसा क्यों हुआ, भगवान ने ऐसा क्यों किया, भगवान ने तो खराब ही कर दिया। सब अच्छा ही हुआ, सब ठीक ही हुआ ऐसे करते चलो। सब इन्साफ ही होता है, शरीर जिस जिस के लायक है, उसे कौ नसा सुख और दुख मिला है। हज़ारों साल सुख भी देखा, कभी कभी दुख आ गया तो तुम रोता है, पीटता है। इतने साल सुख देखा, वो तो तुमको याद भी नहीं। भई मैंने सुख, मज़ा भी तो बहुत देखा है। तो दुख में ज्ञानी व्याकुल क्यों नहीं होता है ? क्योंकि सारा दिन शुक्राना और भलाई में ही उसका मन पड़ा है। वरना ज़रूर दुखी होएगा। ऐसा क्यों हुआ, ऐसा क्यों? तो सब time पर आता है, जाता है, सुख या दुख आता है ये सब शरीर की बातें हैं। आत्मा को नहीं भुलाओ, भगवान को नहीं भुलाओ। और ज्ञान पछाड़ी तक देते आओ, ये बातें करते आओ, करते आओ कि तुम्हारा मन भी सुने, दूसरा भी सुने। तुमको खुशी आएगी और सबकी दुआएं तुमको मिलेंगी। और ब्रह्मज्ञानी तो ब्रह्म यज्ञ करते- करते ही, उसके अंदर इतना आनंद है , उसको आशीषें मिल ही जाती हैं।

जो आनंद में रहता है,जो शांति में रहता है, वो ही उसके लिए आशीष है। भगवान अंदर ही अंदर ओम की कृपा तुम्हारे ऊपर होएगी। जिसने ओम को जाना, आत्मा को जाना उसकी कृपा अंदर ही अंदर होएगी भगवान की तुम्हारे ऊपर। तुम कितना भी बोलो मन आता है अभी तो, मन आता है , मन आने दियो क्योंकि तुमको पहचान देता है मन की, ये मन है, ये आत्मा है। दोनों को पहचानो। बहुत सूक्ष्म दुरदुनी उठाओ, जैसे हीरा परखने की बहुत सूक्ष्म दुरदुनि होती है ना। छोटा छोटा हीरा कैसे परखते हैं, बहुत छोटा हीरा, उसका भाव तुमको बताता है ये yellow है, ये blue है, इसमें दाग है, ये पूरा गोल नहीं है, इसकी कीमत इतनी होनी चाहिए। जौहरी को कितनी नजर है हीरे को परखने की। वैसे ही ये आत्मा को और मन को परखने की तेज़ नजर चाहिए। ऐसा नहीं कि मन आ भी जाए, हमसे चोरी करा भी जाए, हमसे पाप कर्म करा भी जाए, पीछे हम बोलें कि मैंने ऐसा क्यों किया ? ऐसा नहीं हो जाए। तीखी नजर, ऊंची नजर, सराफी नज़र रखो। ये गुरु रोज़ तुमको तीखा करता है। बुद्धि को तेज़ करता है। तेज़ बुद्धि ऐसी मन आवे तो दूर से ही पता चले भई ये आ रहा है, ये मन है। मैं इसको रोकूंगा दूर से ही, मेरे पास नहीं आना है तुम चोर है। ऐसी तेज़ बुद्धि होनी चाहिए। तुम्हारे को मन आएगा, मूड भी खराब, 10-10 घंटा ऊपर सोएगा, नीचे सोएगा, चादर बिछा के मेरे को बस मन आया है। पागल लोक मन तुम्हारे अंदर घुस के आया है? चोर घुस के आया है, चार पांच दूसरा चोर भी घुस के आया है, तुम्हारा खज़ाना भी लूट के गया, तुम्हारी आत्मा, तुम्हारा भगवान, तुम्हारी सब बातें, तुम्हारी तपस्या इतने बरसो की, को गिरा के चला गया। तुमको पता ही नहीं लगा ? फिर नहीं गुरु की मानेगा, उसी time नहीं दूसरे की मानेगा। ऐसा मन ढीठ और अहंकारी हो जाएगा। तो ऐसी तेज़ नजर रखो कि इस मन satan से तुम बच जाओ। जो गुरु की शरण आता है, गुरु की सुनता है निरकलंकी पर कितना भी कलंक लगाए, उसको नहीं लगा क्योंकि वो आत्मा में था।

ऐसा नहीं वो माया में था। तुम माया में कोई wrong कर्म करो, तुम्हारे ऊपर कलंक लगे, तो तुम बोलो मैं तो निरकलंकी हूं, मेरे को तो लगता ही नहीं है। सचमुच जब आत्मा में होएगा, तभी निरकलंकी होएगा। जब तक शरीर में है, तो सब कलंक तुमको लग सकता है। कोई wrong बोलेगा, right बोलेगा, तो तुम दुखी होएगा। मै तो right हूं, मेरे को wrong क्यों बोलता है, मेरे को कलंक क्यों लगता है। लेकिन आत्माकार को कलंक नहीं लगता है क्योंकि आत्माकार कुछ करता है नहीं है, लेकिन अज्ञानी तो करता है। ज्ञानी तो कुछ करत भी नहीं है, तो उसको कलंक क्यों लगेगा ? जब उसको अंदर में ही नहीं आएगा कि मैंने कुछ किया। अपनी आत्मा को बीच में डालना कि मैंने पाप किया, मैंने किया, ये अज्ञान है। और जब तुम आत्मा में रहेगा तो उस time तो कुछ करेगा ही नहीं ना, अपनी इच्छा से। कौन सा पाप पुण्य करेगी ? जो निष्काम है, तो उसी से क्या होएगा ? दूसरे की भलाई का काम होएगा, तो उस में तो तुम्हारा पाप पुण्य नहीं आएंगे।

दूसरे के लिए तुमने सोचा, दूसरे को प्यार किया, दूसरे की भलाई किया, उसमे तुम्हारा कुछ नही गया तो तुम्हारा कर्म भी नही बना। जब तुम मैं और मेरे में खड़ा है तो कर्म बनेगा। मैं शरीर हूं... ये मेरा बेटा है! इसके लिए कुछ भी किया तो कर्म बना.. चाहे अच्छा किया या बुरा किया। कभी मोह हो गया, कभी द्वेष हो गया फिर कर्म बना। काहे के लिए तुम अपने वाले के लिए और अपने वाले अपने सभी के लिए जो भी तुम कर्म करती है, वो अभी तक हिसाब किताब में है उसके संबंध है। संबंध तोड़ दे, तज दे! जो भी संबंध है वही झूठा संबंध है.. शरीर का। ज्ञानी शरीर के संबंधियों को देखता भी नही है कि ये मेरा है, मेरा फर्ज़ है, मेरा धर्म है, मैं इसके लिए यह करूं मैं इसके लिए वो करुं। ज्ञानी माना आत्मा, आत्माकार हमेशा सर्व को आत्मा देखने वाला.. वो सबके भले के लिए करेगा सब कुछ।

मैं और मेरे के लिए कुछ नही करता है, वो संबंध में अटका नही पड़ा है कि ये मेरा है लेकिन मैं ही तो हूं ऐसा समझता है, पर मेरा है ऐसा नही समझेगा। मेरा उसके अंदर में ही नही है, मेरे से ही कर्म बनता है। मैं में कर्म नही बनता है।

ज्ञानी है, वो करता ही कुछ नही है उसको कैसे ख्याल में आएगा की मैने किया, कुछ भी करने वाला नहीं है। इच्छा ही नहीं है उसमे, अहंकार ही नही है तो करने वाला कैसे हुआ। इच्छा है जो किया, कुछ चाहिए सो किया तो वो कितना भी बोले मैंने नही किया, मैंने नही किया मन टिक–टिक करेगा कि तुमने किया। जब वो करता था दृष्टा नही था.. जो करता है वो डरता है, वो मरता है, वो तपता है, वो जलता है। जो भी कर्म तुमने किया.. तुमको याद है, तुम्हारे खाते में है। अभी तुम अपनी आत्मा में टिकेगा तभी सब कर्म भस्म होगा, जब तक तुम देह में है सब कर्म खाते में है। एक किया, एक कर रहा है एक करेगा आगे।

जीव भाव में तीन किस्म के कर्म होते ही रहते हैं। एक करके आया, फिर एक क्रियमान कर रहा है और ज्ञानी जो कर के आया वो शरीर को भोगाता है पर अभी के लिए वो क्रियमान कुछ नही करता है इसलिए आगे के लिए उसका कर्म बनता ही नही है, स्लेट साफ है उसकी।

जो प्रारब्ध है वो इधर ही भोग के, खलास करके शरीर प्रारब्ध अनुसार जब उसका चलता है प्रारब्ध भी कट जाती है शरीर से और शरीर वालों से। मैं और मेरे वालो से जब संबंध कट गया तब प्रारब्ध भी कट गई। भगवान भक्तो के संकल्प पर चलता है। हम भक्तो के भक्त हमारे। भक्त उसको बिठाता है, चलाता है, खिलाता है।

भगवान का तो कोई प्रारब्ध ही नही है। अभी तुम ज्ञानी है प्रलुब्ध ही नही है, प्रलुब्ध ही कट गई, जब मैं और मेरा खलास हो गया। अभी तुम भगवान है, भगवान कभी नही बोलेगा मेरी प्रारब्ध है, मेरा ये संबंधी है, मेरा ये भाई है, बहन है, मेरा ये मर्द है। सुपने का मर्द, सुपने की बहन, सुपने का बाप तुम जागने पर कभी कबूल करेगा कि ये मेरा मर्द है? समझो रात को मर्द से सोई पढ़ी है, बेटे से सोई पढ़ी है उठ के सुपने से बोलेगी क्या कि ये मेरा है? यकीन है कि सुपना था। ऐसे ही तुम सुपने में शादी करके आए, सपने में बच्चा पैदा करके आए, सपने में मरते है, सुपने में कुछ भी करते है। जागने के टाइम तुम बोलते ये सुपना था। इसी प्रकार ज्ञानी जब भी जागता है आत्मा में, जो चीज हो गई जो कल तक हो गया वो भी सुपना है। आज वो जागा आत्मा में, कल का कर्म सब भस्म हो गया।

संचित प्रारब्ध के लिए मन सब भस्म हो जाता है , ज्ञान की अग्नि में। इतनी ज्ञान की अग्नि जले जिसमें मैं और मेरा खतम हो जाए तुम्हारा। सब इच्छाएं ना सो जाएं और वासनाएं नाश हो जाए। तुम्हारा ego खलास हो जाए ऐसी ज्ञान की अग्नि जले तो फिर कोई कर्म खाते में नही आयेगा। कर्मातीत हो जाता है। उसके अंदर में नही आता मैंने कुछ किया भी है। कोई भी बात उसको याद नहीं है life में कि मैंने कुछ किया। जो भी पुराना है, ज्ञान अग्नि में डाल दिया है, खाता ही खत्म हो गया। गुरु को बता के सब कर्म काट दिया। गुरु ही धर्म राजा है, मरने के बाद जो कर्म राजा है उसको हिसाब दियो, हिसाब देगा सच्चा होगा गुरु से एक भी शब्द नहीं छुपाओ, एक भी बात नही छुपाओ गुरु से, पाप करो चाहे पुण्य करो, अच्छा करो या बुरा करो सब भगवान को दे दो। जो मेरे परायण होता है सब करम मेरे में अर्पण करता, सब फल मेरे को अर्पण करता है जो मेरे परायण होता है...वो मेरा भगत है। उसको मैं माया से तार देता हूं।

अभी भी मेरे परायण, मेरे लिए ही जिए वो। मेरा ही भजन, कीर्तन, सिमरन, याद मेरे को ही दिल में रखे, मेरे को ही मन में रखे। मेरे परायण माना मेरे लिए ही जिए दुनिया में। मेरे लिए जिए, मेरे लिए मरे, मेरे लिए खाए, मेरे लिए ही सिमरन करे, मेरे लिए घूमे मेरे लिए सब कुछ करे। अपना ego त्याग कर देवे, तो वो खुद भगवान हो जाए। Egoless हो जाए।

साथ ले जियो क्या, जब सब ठाट दे दिया गुरु को तो उसके मगर में साथ नही चलेगा...clear हो गया..सब साफ हो गया। अभी ठाट कौन सा चलेगा– आत्माकार शुद्ध पवित्र कि मैं आत्मा हूं, सर्व आत्मा है, मैंने कोई कर्म नही किया है, कर्म मेरा कोई खाते में नही है। नहीं पाप है नहीं पुण्य है क्योंकि करता भाव ही निकल गया है जिसके दिल से। जिसके अंदर से इच्छा ही निकल गई कर्म करने की..चाहे पुण्य, चाहे पाप करने की इच्छा नही है। चाहिए ही कुछ नही। जिसको कुछ नही चाहिए बस वही भगवान है जिसको कुछ नहीं चाहिए.. वो तो ज्ञानी हो गया।

भले तुम अकेला बैठो, भले कोई खयाल नही चले। कोई भी खयाल नही चले, तुम ऐसा भी बैठ सको। तो तुम तभी भी तुम अकेला कितना time बैठेगा। फिर भी जब उठेगा तो कर्म में द्वैत आता, द्वेष आता है, मोह आता है, खयाल आता है उसी को तुम जांचों। फिर जब तुम व्यवहार में आता है भूल जाता है। दो, तीन और चार देखता है।

जभी भी तुम कर्म में लग जाते है, तभी भी किसी का दोष नही देखो...सबके लिए एक जैसा प्यार होवे। कैसे किसी से बोलते हैं, कैसे किसी से रैणी करते हैं, कैसे किसी से नजर फिराते हैं। निराकार माना जो सब में निराकार देखे। निराकार माना अकेले थोड़ा बैठना है। निराकार कहां नहीं है.. जहां तहां निराकार है। गुरु ही निराकार में टिकाता है। जितना तुम गुरु से बात चीत करेगा, मन खाली किया? तुम्हारा खयाल खलास हुआ?

तुम्हारे अंदर से अज्ञान गया? जब तक अज्ञान है तब तक गुरु से उतर-प्रश्न करना चाहिए, अज्ञान निकालना चाहिए। जब अज्ञान निकल गया automatically तुम समाधि में बैठे रहेंगे। गुरु को भी खातरी होगी की वो समाधि में बैठा है, आत्मा में बैठा है। गुरु को खातरी नही है की वो आत्मा में बैठा है, ये मन में बैठा है। कभी मन में बैठा है, कभी तन में बैठा है, कभी दूसरे में बैठा है, कभी तीसरे में बैठा है। अगर आत्मा में बैठा है वो भी आके बताए कि मैं कितने time आत्मा में रहता हूं, मेरे को कितना आनंद आया, कितना मौन हुआ, कितनी शांति हुई, कैसे मैने निराकार का दर्शन किया जहां तहां, कैसे मैं अंदर बाहर एक ही आत्मा देखता हूं, अंदर बाहर मौन हो गई शांत हो गई, कोई संकल्प नहीं, कोई विकल्प नहीं, इच्छा नहीं, राग–द्वेष नहीं, कोई कर्म नहीं, कोई past future नहीं याद आता है, बिल्कुल मैं खाली हूं। ऐसा जो है निराकार का अनुभव आके बताओ। भले बैठो चाहे सारा दिन बैठो लेकिन आके अनुभव बताओ।

गुरु से मन छुपाना नही चाहिए, एक भी ख्याल छुपाना नहीं चाहिए। चाहे निराकार का ध्यान करो, चाहे मन का ध्यान करो, चाहे किसी दूसरे का ध्यान करो। गुरु को बात बताके और खाली हो जाओ। जितनी जल्दी खाली उतना आत्मा में जल्दी टिकेगा। जितने भी खाली उतना तुम्हारा मन आत्मा में रहेगा।

कोई ऐसा खयाल नही है जो मुझे मुरझाए। अपनी आत्मा में ही रहते हैं। जिसका खयाल मुरझाता है वो आके करो। रोज़-रोज़ गुरु को सारे दिन का जो- जो किया अच्छी तरह से बताओ, program, सारे दिन अंदर में क्या चला सुबह से रात तक। हम कल भी क्या था, आज क्या है, कितना progress किया, कितना आगे बड़ा।

कल क्या खयाल था और आज क्या क्या ख्याल है। कल कितना निश्चय था। आज क्या निश्चय है। रोज़ का रोज़ गुरु से पांच मिनट ही बात करना चाहिए। अपने दिल की बात सच्ची–सच्ची बताके फिर भले ओम में टिको, आत्मा में टिको, कहां भी टिको। पर सफाई रोज़ जरूरी है। जैसे झाड़ू रोज़ मारते हैं वैसे तुम अपना अनुभव सुनाके पीछे जाके अपनी शांति में रहो अपनी। सो जाओ नींद भी अच्छी आएगी जब आत्मा में टिकेगा।

ख्याल नही भी आए पर अंदर सूक्ष्म में ख्याल चलेंगे, निकाल दिया तो सूक्ष्म से भी निकल जायेंगे automatically।

क्या सोचा है, क्या समझा है, एकांत कैसे मिलेगा। मन किधर जाता, कैसे जाता, कैसे भटकाता, कैसे दुखी करता, कैसे सुखी करता है.. उसका कारण क्या है? अंदर भगवान को भी जानो कि मैं भगवान हूं, मन मेरे से जुदा है। मन के संसार को भी जाना, तो भगवान को भी जाना, पुरुष को भी जाना तो प्रकृति को भी जाना। ये प्रकृति कैसे स्वभाव में चलती है, मेरी दासी है, मन बुद्धि कैसे मेरा दास है। मन की कोई हस्ती भी नही है फिर भी हम मन को ऐसा बड़ा कर देते है जो हमको मार के एक सेकंड में पूरा कर देता है। और इतना बड़ा भगवान, भगवानके पास थोड़ा सा मन आ गया तू कहां बच गया। देखो कितना ये बेयंत है मन भी पता चलता है कहां से आया, कौन सी खिड़की से आया, कैसा खयाल लेके आया, अचानक क्या हो गया, अभी अभी मैं आनंद में बैठा था अभी मेरे मन में तूफान हो गया एक दम। इक कतरा तूफान में कैसे डूबता है, तुम्हारा ख्याल कैसे आके तूफान में डूबता है। था भी कुछ नही, है भी कुछ नही, होता भी कुछ नही है। कोई बात भी नहीं है, तो मन ऐसी बड़ी बात करके दिखाएगा, ऐसी लंबी बात कर के दिखाएगा कि जगत सच है, तुम्हारे से कुछ हो गया, तुम्हारे से बहुत ज़ुल्म हो गए। तुम्हारा अपना वाला मर गया। भई यह ज़ुल्म है।

तुम्हारा था क्या तुमने माना क्यों ये मेरा है। तो फिर यह तुम्हारा दोष है। तुम अपने दोष की सजा देख रहा है क्योंकि तुम ने माना ये मेरा है। था भी तेरा नहीं तो भी बोला मेरा है। गुरु को क्या बोलेगा तुमने मुझे छुड़ाया.. तुम्हारा था क्या, तुम लेके आए थे क्या? तुम्हारा कोई दोस्त था? तुम्हारा बेटा था, माँ बाप था? तुम्हारा क्या था जिसको हमने छुड़ाया है। गुरु क्या छुड़ाता है तुम्हारा? कौन सी तुम्हारी चीज़ थी। हैदराबाद में कोई किला था तुम बोलते ये मेरा है। मेरा मेरा करते हो। तेरा था क्या? Eg. एक माई आई और कहती ये जो किला है ना अपोलो बंदर का वो मैंने आपको present दी है। हमने बोला ये तुम्हारा है? कहती हमारा तो नही है पर हमने समझा था हमारा है। मैं तुमको present देता हूँ! तुम सब ऐसे बेवकूफ बैठे है। हमारा मर्द छुड़ाया, बेटा छुड़ाया, धंधा छुड़ाया, पैसा छुड़ाया, बाप छुड़ाया, व्यवहार छुड़ाया। तुम्हारे से चोरी जरूर छुड़ाई, ठगी छुड़ाई, बदमाशी छुड़ाई। जो बदमाश होके बैठे थे हठ करके ये मेरा है, मेरापन दुखी करता था, तुम्हारा ही संसार दुखी करता था। तुमने ही जाल फैलाई थी, तुमने ही खाई अपनी। तुम जो गंद कचरे में पड़ा था, तुमसे वो छुड़ाई उसके लिए कितनी खुशी होनी चाहिए, उसके लिए गुरु को कितना present देनी चाहिए। क्या हमारे पास है जो गुरु को हम देवें जिसने गंद से छुड़ाया है? आसक्ति छुड़ाई, मोह छुड़ाया, ममता छुड़ाई, गंद छुड़ाया, गटर छुड़ाया। जन्म मरण के चाकर में जाते थे, कोमा में पड़े थे, दस दस साल से कोमा में पड़े हैं । एक माई की लड़की की शादी हो रही थी, अचानक टूट गई। टूट गई तो यह बेहोश हो गई, आजकोमा में पढ़ी है बंगलौर में। जब भी अचानक उठती है यही बोलती आज तो मांगनी थी.. हुई?। अभी 10 साल से कोमा में है। तुमको एक वासना होती थी तो तुम कोमा में पड़ के उसे ही याद करते थे। ऐसी है वासना, उसके लिए तुमको गुरु को क्या देना चाहिए। गुरु ने तुमको कितना छुड़ाया। तुम धमकाते है गुरु को कि तुमने कितना छुड़ाया।

मेरी लड़की मर गई, लड़का मर गया, यह मेरे पे ज़ुल्म हो गया। अरे, लड़की तेरी थी? तेरा लड़का था? तुम लेके आयी थी? हां मैंने चार बच्चा पैदा किया था वह मर गया। सुपने का बच्चा, जागृत में मर गया। सुपने से उठ के मर गया। सुपने में मेरा मेरा कर के पराए आदमी को अपना समझा, पराए बाप को अपना समझा। है सब भगवान का! तुमने उसकी अमानत में ख़यानत किया। कि मेरा है। किसने तुम्हे certificate दिया था की ये तेरा है? काहे को किसी से दिल लगाया, क्यों? किसने बोला लड़के से, लड़की से, बाप से, बेटे से दिल लगाने को। लगाते जिनको मेरा बनाते दुख मिलता। गुरु आके दर्दों से छुड़ाता है। दिल लगाओ तो आत्मा से लगाओ, परमात्मा से लगाओ, सबके भीतर जो भगवान बैठा है उस से लगाओ। सबकी आंखों में देखो तो वो ही है, एक ही ईश्वर है, सबको ईश्वर देखकर प्यार करो। किसी के शरीर में फंस गया की मैं इसकी मम्मी मैं उसका डैडी यह मेरा बेटा बेटी। ये जो तुम बन के बैठते, गुरु इसको अलग करता है। अलग-अलग करके कहता है...हर एक भगवान है।

जब तक फंसे पड़े हैं तब तक भगवान नहीं हैं, जीव हैं। जब फंसना छोड़ा तो भगवान हैं। जिसकी कहीं भी वासना नहीं है वो भगवान है। जो कही अटका तो तुम जीव है,नही अटका तो भगवान है। जीव बनके दुख दर्द में फंसे हुए थे, रोते थे, पीटते थे। दर्द से गुरु तुम्हे छुड़ाता है, ऐसे तो गुरु की महान बढ़ाई है। कैसे गुरु अंदर जाके operation करता है, जहां जहां पस भरी पड़ी है वहां के दुख, रोग निकलता है। कितनी शांति आ जाती है। Operation करने के टाइम कितना दुख दर्द होता है, पीछे कितनी शांति है। Operation करने में दुख है लेकिन डॉक्टर के अंदर कितनी करुणा है जहां जहां इसको दुख है, आज ही निकल जाए। कितना करुणानिधान है जो तुम्हें छुड़ाया है। तुम्हारा था क्या? तुम क्या लेके आए थे अपने साथ जो छुड़ाया है?

तुम खुद एक अकेला आए है, तुम खुद खुदा है, भगवान है। भगवान के कुर्सी पर बिठाने के लिए गुरु गंद, कचरे से छुड़ाता है, बड़ी कुर्सी पे बिठाने के लिए। तुम बड़ी कुर्सी के लायक नही है तभी छोटी-छोटी कुर्सी के लिए रोता है। तुम बोलता मेरे को बड़ी कुर्सी नही चाहिए, मैं भगवान होना नही मागंता हूं, मैं तो जीव बन कर ही रहूंगा। यह जो दुनिया है बहुत अच्छी है, सुंदर है। माया बहुत अच्छी लगती है। माया का दुख–सुख मैं लूंगा। कोई नही बोलता है मैं निराकार में टिकूं, कोई नही बोलता है मैं निज सुख देखूं, कोई नही बोलता है मैं अपनी आत्मा का दर्शन करू, कोई नही बोलता है मैं आत्मा में टिकूं। शरीर होके रहो! शरीर होके रहना में बड़ा मजा आता है? मन तुम्हारे अंदर अपनी गद्दी बिछा के बैठा है। मन तुम्हे सताए, रुलाए, जलाए, तुम बड़ा खुश है लेकिन गुरु का राज इस मन पर चले और मन का राज बिल्कुल नाश हो जाए, मन की चले ही नही। रबर की गुड़िया की तरह मुड़ना सीखो तुम। कोई बोले उठो तो उठो, बैठो तो बैठो, सोओ तो सोओ, नही सोओ तो नही सोओ, इधर जाओ, इधर बैठो, ऐसे करो सब बात में एक ही बात है क्या हुआ? ऐसेरब्बर की गुड़िया की तरह गुरु तुमको मोड़ के आत्मा में जोड़ता है। "जो मन को मोड़े मोड़े, निज सुख वो ही पाए, निजनिर्मल सुख वो ही पाए जो मन को मोड़े मोड़े"। जहां भी मन हो मोड़ो फिर झुको, फिर झुको! मरो, आत्मा में जुड़ जाओ।

मन को देखो अंदर कितना मन का संसार भरा पड़ा है, कितना मन दुखी करता है तुम को थोड़ी–थोड़ी बात पे। तुम बेअंत का अंत देखेगा ना, वो मैं ही हूं आत्मा। मन भी बेअंत है कितना deep है उसको भी जांनेगा, और इधर आत्मा जितनी deep है उसको जानेगा। कितना deep हम आत्मा में रहे कि थोड़ा सा भी मन का ये तूफान नहीं आए कभी। तूफान मेरे को खराब करके जाए, मेरे को दुखी करके जाए और अगर दूसरो को दोष दूं उसका दोष है, इसका दोष है, तुम्हारा दोष है, तुमने ऐसा किया, उसने ऐसा किया...

कइयों को हम दोष दे सकते है– ये मन की वजह से। कितनों हम कर्म बना लेते है, जो निरिच्छा है वो कर्म ही नहीं बनाता, जो निष्कामी है वो कर्म नही बनाता है, जो अपने सुख के लिए नहीं सोचता वो कर्म नही बनाता। हमारे सुख के लिए सारी दुनिया जाके सोचे हम क्यों सोचें। हमको तो सुख चाहिए भी नहीं। तो सारी दुनिया हमारे सुख के लिए सोचती है। जिसको कुछ भी चाहिए कोई नहीं सोचेगा उसके बारे, जिसको कुछ चाहिए ही नहीं पूरी दुनिया उसके बारे सोचेगी। जब हम चाहना से ऊपर है, सारी दुनिया हमारे लिए सोचेगी कि किधर खाए, किधर घूमे, किधर बैठे, कैसे चले, क्या करें, कैसे इसको सुख दूं आपे सब सोचता है। उसे अपने लिए नहीं चाहिए। दूसरों के लिए हम खयाल करते हैं फिर दूसरा हमारे लिए करता है। दूसरे के सुख के लिए खयाल करो, दूसरा तुम्हारे लिए आपे ही करेगा। जो सुख की चाहना ही नही है, उसका खयाल भी नही आता है।

भगवान खुद हमारा खयाल आपे ही कर रहा है। सब का पूरा पूरा इंसाफ कर रहा है। किसी से भी ज़ुल्म नही हुआ आज तक। वह करुणानिधान है, भगवान के लिए सब कुछ है, भगवान हमारे लिए सब कुछ है। हमने जितना भगवान को दिया है, भगवान ने उतना दसवां हमको दिया है। कौन बोलता भगवान ने नहीं दिया है? हमको अपना अहंकार है मैंने सब कुछ दिया, मैने सब कुछ किया। मैने क्या क्या किया...त्याग का अहंकार काहे को? त्याग कौनसी चीज़ का किया है? तुम्हारी चीज़ ही नही थी, तो त्याग क्या किया? रक्त रोग का पुतला ये तुम्हारा शरीर तुम्हारा मन गटर वाला, तुम्हारा शरीर गटर वाला, तुम्हारा धन गटर वाला..ये तीन ही तो है जो मिथ्या चीज़ है। वो भी गुरु को देके तुम बोलते मैंने दिया? और था भी गुरु का। लाया कहां से तुमने? तुम बोलते तन, मन, धन गुरु को दिया तुम देने वाला बना फिर कर्ता बना तपस्या ही खराब हो गई तुम्हारी। कभी भी मुख से निकल गया ना कि मैंने ये त्याग किया, तपस्या की है, मैने गुरु के लिए सब कुछ किया है।

गुरु के ऊपर मेहरबानी की है? गुरु के लिए तुमने गटर छोड़ा है क्या या अपने सुख के लिए तुमने छोड़ा? तुम सुखी होएगा या गुरु सुखी होगा तुम्हारे छोड़ने से। गुरु सुखी हुआ अपने त्याग से, तपस्या से, तुम सुखी होगा अपने त्याग और तपस्या से।

हर एक जितना त्याग, जितनी तपस्या करेगा, त्याग से ऊपर ताकत है। जिसने खुशी खुशी से त्याग कर दिया कि ये सब तुच्छ है, ये सब कल्पना है कुछ भी नहीं है। ब्रह्म आलोक का सुख भी कुछ नहीं है मेरे लिए। ये सब जिसने तुच्छ समझा है दुनिया के होने लायक है।

वही सच्चा जिज्ञासु है जो ब्रह्म होने का सुख भी उड़ा दे आत्मा में। फूक देवे तो उड़ जाए सब सुख। आत्मा का सुख सबसे उत्तम सुख है। उससे ज्यादती कोई सुख नहीं है दुनिया में, जो तुमने छोड़ा है, जो याद है तुम्हें कि त्याग किया है। हे अर्जुन में सब इंद्रियों के सुख तुच्छ सुख हैं। जो आत्मा के सुख में रहता है, आत्मा में प्रीति वाला है, आत्मा की तृप्ति वाला है, अपने अंदर में बैठा है सलामत बैठा है। आत्मा से बाहर निकला तो ख्वार होके मरेगा। फिर वापस घर में आता ही नहीं है। एक बारी इस घर को छोड़ा तू किधर जाएगा। जैसे इस घर को छोड़कर धक्के में आएगा वैसे आत्मा के घर को छोड़ के धक्के में आएगा। जो एक बच्चा अपना घर छोड़ के बाहर गालियों में धक्के खाता है, कितना दुखी होता है कितना और खराब और खराब होता जाएगा। जैसे जैसे उसकी company बाहर से मिलेगी वैसा खराब होगा। वैसे ही तुम्हारे मन को भी बाहर की खराब company मिली है बेटे की, बहू की, सहेली की, दोस्तों की, इधर की उधर की company मिली तुम किधर चला गया। देखो बुलाने में कितनी देरी लगती है। जितनी मोटर आगे गई तुम्हारी, उतना ही reverse करने में देरी लगेगी ना क्योंकि one way traffic है। जहां भी जाता वापिस नही आ सकता है।

तुम गया तो सही वापस कैसे आएगा अभी। ये शरीर है गलियां, ये शरीर है परदेस, तुम परदेश में आके भटक गया। अपना देश, अपना वतन छोड़ के, अपनी आत्मा छोड़ के तुम परदेश में जाके धक्का खाया । जिधर कोई रहने का मकान ही नही है परदेस में, तुम परदेस में जाता है थोड़े टाइम के लिए visa लेके जाता है। तुमको पता है तीन चार महीने का visa है तुमको वापस जाना है । उधर कैसे रहेगा हम तो थोड़े टाइम के लिए परदेस आए है, हमारा तो हिंदुस्तान है। हमको वापस जाने का है सब छोड़ के, तुम उधर दिल लगाओगे? यह मकान हमारा, औरत हमारी, बच्चा हमारा भी सब छोड़ के जाने का है। हमारा तो India है, वापस जाने का है तो उधर तुम दिल नहीं लगाएगा। इधर तुम इस परदेस में आके दिल रख के बैठा है, ये शरीर आज है, कल है ही नही। आंख बंद करो तो है ही नही, तो किसके साथ तुम दिल लगा के बैठा है? देखा दुनिया का झूठा झमेला तो मन को हटाना पड़ेगा। अभी तुम मन को नही हटाएगा, अभी तुम मन को नही भूलेगा वो तुम्हें मार के जाएगा, तुम मोह नहीं निकालेगा तो वो तुमसे मोह निकलवाएगा। तुम नौकर जो जवाब नही देगा, नौकर तुम्हे जवाब देके जायेगा। तुम सब विषयों को, विकारों को, इच्छा को, वासनाओं को आज जवाब नही देगा तो एक दिन भोग तुमको छोड़ के भाग जाएगा। समर्थ वह है जो भोगों को खुद छोड़े, असमर्थ है जिसे भोग छोड़ गए।

अचानक से किसी का मर्द मर जाता है विधवा क्यों रोती है क्योंकि भोग छूट गया। किसी का छोड़ के जाता, किसी का मर जाता, किसी का बिछुड़ा हो जाता है, कोई बीमार पढ़ जाता है फिर औरत हमेशा के लिए रोती है। भई मेरा मर्द हमेशा बीमार है, मर्द बोलता भी मेरी बीवी बीमार है, मेरे को थोड़ी सुख देती है। तो वो भी तो दुखीया है। इच्छा ही तो दुख देती है। जिस जिस से सुख की इच्छा रखेगा उससे दुख ही मिलेगा, सुख नही मिलेगा। सुख मांगत दुख आगे आवत है।

जहां जहां तुम दौड़ता है मृगतृष्णा के सुख के लिए उधर से जलन सड़न मिलेगी और कुछ नहीं मिलेगा। गुरु ने पहले ही बोला लोटा लेके जाने का नहीं है माया में उधर पानी नहीं है, इधर ही रोक के तुमको बिठाया है। लोटे में से एक बूंद भी पानी का नहीं लेके आएगा। गुरु ऐसी मेहर कर देता है जो हम को कर्म करने से ही छुड़ा देता है। हम तो लोटा लेकर फ़र्ज़ करने जाता था, उधर पानी बहुत अच्छा है, हमारी प्यास बुझेगी। लोटा लेकर हमारा यही टिका देता है। उधर पानी है ही नहीं। जहां है तहां से ही मिलेगा।

पानी तुम्हारे अंदर है, झरना तुम्हारे अंदर है, waterfall तुम्हारे अंदर है...बाहर तो मृगतृष्णा का जल है। तुम्हें अंदर जाने में तकलीफ होती है। गुरु पर ऐतबार नहीं आता है। गुरु बोलता सुख नहीं है, तुम बोलते मेरे को तो सुख है..मेरे को तो दिखने में आता है.. मृगतृष्णा के जल में पानी है। गुरु बोलता जाओ, जाके थोड़ा ही आगे जायेगा जलेगा, फिर जाएगा जलेगा, क्यों? क्योंकि भरम में समझा ये पानी है, भरम में समझा यहां से सुख मिलेगा और है तपन। लड्डू खाओगे तो पेट जलेगा, नहीं खाओगे तो तड़पेगा, ऐसा ये मन है। खाता तो पछताता, नहीं खाता तो भी पछताता..माया ऐसी है। कांटा लगता भी है तो भी कहता है नहीं छोड़ूंगा।

मन ऐसा है जब कुछ छोड़ के दुबारा बोलता है क्यों छोड़ा तुमने। छोड़ के फिर दुखी होता, छोड़कर फिर अहंकार करता है मैने छोड़ा। ज्ञान के बाद एक भी चीज का अहंकार मत करना मैंने छोड़ा। कभी भी त्याग का अहंकार नहीं करना कि मैंने छोड़ा। भई मैंने सिनेमा छोड़ा, मैंने तो दोस्त छोड़ा मैं महल छोड़ा। मैंने तो कपड़ा थोड़ा मैंने तो गहना छोड़ा। मैं भी हूं और तुमने छोड़ा भी। और भी अज्ञानी से ज्यादति तुम्हारा अहंकार चढ़ गया है। मैं त्यागी, मैं बैरागी, मैंने यह छोड़ा मैंने वो छोड़ा। त्यागी बैरागी माया सब मस्त किया। त्याग का अहंकार करेगा, वेराग का अहंकार करेगा तो फिर माया आयेगी।

किसी का अहंकार मत करो बोलो– मैंने कुछ छोड़ा ही नहीं, मैंने बस पाया।! मैंने सच को पाया, मैंने ज्ञान को पाया, मैंने आत्मा को पाया, मेरे को धुन आ गया अंदर में आत्मा का। धीरज, शांति, प्रेम तुम क्या नहीं सीखा है इधर से। कितना मिला पर छोड़ा कुछ भी नहीं है। ऐसे छूट जाए कि तुम को पता भी नहीं चले छुटने का। मैं नही हूं छोड़ने वाला, सब गुरु की करामात है जिसने हमको प्रेम में सब छुड़ा दिया, automatic सब छूट गया। सच मिला तो झूठ छूट गया। सच को अच्छी तरह से जानो, मानो, तभी छोड़ना। जल्दी नहीं है छोड़ने की, अभी भी जा कर मजा लियो। छोड़ो जभी जब तुम्हारा मन बोले। भई सच में झूठ है। यहां मरना है जलना है, सच में झूठ है। जितना भी तुम आगे बढ़ा है तुम्हें experience मिला है कि क्या है। जितना भी तुम्हें experience मिला है, बताना चाहिए। भई मैंने शादी भी की, बच्चा भी किया, दुनिया भी देखी, सब किया पर क्या मिला? जितने भी तुमको अनुभव मिले, प्यार मिला बताओ सबको।

रस्सी को संसार में सांप समझ के डर रहे थे। सांप का डर हमको खा रहा था। गुरु ने हमको सुपने से जगा दिया। अभी हम जग गए। अच्छी तरह से आंख खोलो, फिर फिर तुम्हारी आंख बंद हो जाती है। फिर फिर मोह में, कामना में, वासना में आंख बंद हो जाती है। गुरु फिर एक लप्पड़ लगा के आंख तुम्हारी खोलता है। आंखे खोल के चलो, अरे कैसे चलता है। फिर तुम सुपने में आ जाता है। मेहरबानी नहीं की है तुमने किसी के ऊपर। सत्संग सुना है तो मेहरबानी अपने ऊपर की है। कुछ भी त्याग वैराग किया है, कुछ भी ज्ञान समझा है, जब भी मन को मोड़ा है, कुछ भी पुरुषार्थ किया है, वो भी गुरु ने ही किया है है। उसकी मेहर है..तुमने कुछ नही किया आज तक। तुम्हारे ऊपर गुरु की करुणा है। तुम्हारे ऊपर कृपा है सभी गुरु ने किया है। हम तो पूछा भी नहीं छोड़ सकते थे एक कदम भी नहीं बढ़ सकते थे। हमारा एक कदम भी गुरु ने बढ़वाया है।

आपे ही कोई इस रास्ते पे बढ़ सकता है बताओ? माया तुमको पकड़ के बैठी है, काट के बैठी है।गुरु आके माया से तुम्हारी जिंद छुड़ाता है तुम्हारी। जिन्न भूत से जान छुड़ाता है ऐसी है माया।

जो अकेला रहता है वह भगवान है ऐसे दो पैर वाला भगवान है दो पैर वाला गधा। दो पैर वाला फैमिली वाला भई इतनी हमारी फैमिली है। सब में जाके वासना पड़ी है। फैमिली है सारी सृष्टि कि फैमिली है इतनी छोटी। छोटी छोटी फैमिली में जाकर फंस गए। बड़ी फैमिली का प्यार देखा ही नहीं कभी। एक दो बच्चे में ही फंस गए।

एक आंख बच गई। एक आंख के लिए रोएं या जो एक आंख बच गई उसके लिए हंसे। एक टांग टूट गई, दूसरी टांग बच गई। तो हंसना चाहिए कि रोना चाहिए। जब तुम हॉस्पिटल जाते हैं तो डरते हैं, बेटा जाए तो डरते हैं, कहते हैं आज बड़ा खराब दिन निकला। चिट्ठी आई तो है तो भी डरते हैं ऐसा खराब दिन हुआ। एक माई का मर्द विलायत में था। तो गई भाई के पास इतने दिन हुए चिट्ठी नहीं आई। तो वचन निकालो ग्रंथ साहिब से, अच्छा वचन निकालो। अच्छा वचन देखो कौन सा निकलता है। मेरे मर्द की चिट्ठी नहीं आई है इतने दिन से। तो जैसे ही वचन निकाला जैसे गुरु नानक साहिब की वाणी चलती है उसमें कि यमदूत पापी नरक में जाएंगे, ऐसा होने का वैसा होएगा, असंख चोर हरामखोर, असंख पापी पाप कर जाए। ऐसी अष्टपदी आ गई। माई जो घबराई, ऐसी पड़ गई पलंग पर। हम उसके घर पर गए। भई क्या बात है, सोई पड़ी है। बोली बात मत पूछो, हमारे मर्द की चिट्ठी भी नहीं आई है और वचन भी खराब निकला है। हमने बोला, वचन क्या खराब होता है गुरु नानक क्या कुछ गलत बोल कर गया है। बोली वचन में निकला है यमदूत, पापी, हरामखोर, नरक में जाएगा। हम समझा है कि मर्द को कुछ हो जाएगा। हमने पूछा कुछ उपाय किया, मर्द को बचाने का कुछ रास्ता निकाला।

हमने बोला ग्रंथ साहिब रखो, पूजा करो, लंगर करो, सब को बुलाओ। तुम कौन से मुंह के पिंजरे में पड़ी है। है कुछ नहीं। परमात्मा गुरु का वचन कभी खराब होता है क्या? चाहे वो गाली भी दे दे खराब होता है क्या?भई उसमें रन निकल आई तो पता नहीं मेरे मर्द को क्या होगा। मैने बोला तुम्हारे मर्द को कुछ हुआ ही नही हुआ है। तुम भले अभी टेलीफोन करके पूछो। गुरु कहा से भी बोले कैसा भी बोलो कभी खराब नही होता, मिश्री किधर से भी चखो मीठी ही होती। गुरु गाली दे तो भी मीठी है, मार दे तो भी मीठी है...गुरु का वचन कभी खराब नही होता! सच में थोड़े टाइम बाद उसको चिट्ठी आ गई मैं बिल्कुल ठीक हूं, बाहर गया था घूमने के लिए। इसलिए तुम्हारे को चिट्ठी लिख मिल सका। मुझे माफ करना मैं जल्दी आऊंगा। हमारे पास आई बोली तुम सच थी। हम क्या सच हैं तुम बेवकूफ बैठे हो। कोई बात होएगी तुम ब्राह्मण के पास जाएगा। तुम ब्राह्मण को पैसा चाहिए तुम्हारे से। ऐसा ग्रह भारी है तुम्हारे बेटे के लिए बस माई 2-4 हजार देकर आएगी। ऐसे भरम में सब आदमी पड़ गए हैं, है कुछ भी नहीं। अब कोई भी हालत आजाए तुम्हारे सामने बुरी, कोई मर भी जाता है, कोई accident हो जाता है, कोई card चिट्ठी आती...शुक्राना मानने वाली हर हालत है। कोई भी हालत आएगी तुम शुकराना मान सकता है इसके लिए बात समझो। जैसे भी हालत है best है, शुक्राना करो। भगवान कभी bad करता ही नहीं है।भगवान ही अच्छा है तो अच्छा ही करेगा। भगवान goodness है, परमात्मा है ही अच्छाई। भगवान के राज में कभी बुराई होती ही नही है। परमात्मा के राज में होती ही सच्चाई है, सफाई है कभी ही बुराई नही आयेगी। हर एक दिन को तुम ऐसा समझो आज best दिन है।

सुबह सुबह उठ के तुम मुस्कुराओ, शुक्राना गाओ, सारा दिन तुम्हारा अच्छा होगा। सबको भगवान करके देखो। तुम सुबह उठके और आज बोलो कि मैं सर्वत्र परमात्मा देखूंगा। जो भी हालत आई उसको बहुत अच्छी तरह से फेस करूंगा।

हालत को हालत लग जाएगी, हालत मेरे को नहीं लगेगी। हालतें बाहर है अंदर नहीं, मैं तो आत्मा हूं! हालत बाहर की बाहर हो जाएगी। जगत बाहर है मेरे अंदर नहीं आयेगा। जो भी उथल पुथल होएगी, मेरे मन में नहीं होएगी। जो भी तूफान आएगा, जगत में change आएगा पर मेरे में नही आयेगा, मैं ऐसा unchangeable आत्मा, एकरस हूं।

रोज़ ऐसा बोलो मैं एक रस रहूंगा। मेरी कोई शांति फिटा नहीं सकता। आएगा भगवान तुम्हारी शांति फिटाने के लिए, आयेगी ऐसी परीक्षा देखने के लिए इसकी शांति कैसी है। रोज़ परीक्षा लेगा लेकिन तुम पास हो जाओ। भगवान को बोलो तुम कौन से भी form में आओ, कौन से भी कपड़े में आओ, कौन से भी रूप में आओ, change कर के आओ.. मैं तुमको पहचानता हूं। हर जगह मैं तुम्हे पहचानता हूं, किसी से भी क्रोध, राग, द्वेष नही आएगा। सब को एक ही भगवान कर के तुम देखेगा तो एक एक दिन6तुम्हारा अच्छा बीतेगा या नही? एक-एक दिन तुम्हारा बेस्ट बीतेगा कि नहीं?

जब तुम सर्वत्र भगवान देखेगा वो best day नही हुआ? अच्छा दिन नहीं हुआ? ज्ञानी के लिए हर रोज़ शादी है, मुबारकबादी है, हर रोज़ मेरे लिए होली है, हर रात मेरे लिए दिवाली है, हर रोज़ मेरे लिए आज़ादी है। “ये ज्ञान की एक फुलवारी है हर वक्त हंसी, हर वक्त खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा..जब आशिक मस्त फकीर हुआ, तो क्या दिल गीरी है बाबा”। “हम आशिक उसी सनम के है जो दिलबर सबसे आला है, दिल उसका ही दीवाना है, मन उसका ही मतवाला है”। जब हम ऐसे माशूक के आशिक हैं जो दिलबर सबसे आला है तो मैं कैसे नहीं मस्त बनूंगा। ऐसी मस्त फकीरी हमको दिओ जिसमें कोई भी हानि, मान अपमान मेरे को नहीं असर करे। ऐसी मस्त फकीरी गुरु से लेनी चाहिए। नहीं तो कभी सुखी, कभी दुखी, कभी रोना कभी हंसना, कभी चलना कभी सड़ना कभी क्रोध कभी काम। ये कोई जिंदगी नहीं है।

एक बारी बैठ कर अच्छी तरह से ज्ञान पक्का करो। ऐसा धीरज, ऐसी शांति, ऐसा मौन, सबको माफी दो, सब भूल जाओ। एक पल पहले क्या हुआ भुलाना सीखो। अरे तुम तो 8-8 साल की बातें भी याद करते हो। इधर जो भी हुआ पानी डालो उस पर। कुछ हुआ ही नहीं है जब जगत ही नहीं है तो जगत की बात क्या है। जगत की बातें कौन सी याद करें। यह तो सभी घटना है ऐसा तो होता ही रहेगा। सब अच्छा ही होता है सब अच्छा ही हुआ है कभी कोई खराबी नहीं हुई। मेरे लिए कभी कोई बुराई नहीं हुई है। भगवान ने कभी मेरे लिए बुरा नहीं किया है। जो अपने-अपने भाग में मस्त होता है वही सच्चा इंसान है। इसका भाग तो अच्छा है मेरा नहीं है, इसने तो ऐसा पाया है मैंने नहीं पाया, यह तो ज्ञानी हो गया है मैं अभी नहीं हूं। अपने को कम समझना, अपना भाव कम समझना यह सब कमजोर आदमी का ख्याल है। सब ऐसा समझें कि मेरा भाग खास भगवान ने अपने हाथों से लिखा है क्योंकि मैं son of God हूं। भगवान का बच्चा हूं, भगवान कभी अपने बच्चे के लिए बुरा सोच सकता? तुम्हारा भाग कभी खराब कर सकता है? भगवान के बच्चे हो! तुमने कभी अपने बच्चे के लिए सोचा है उसका भाग खराब हो तो भगवान तुम्हारा भाग कैसे खराब करेगा? सब का भाग बहुत उत्तम जहां तुम है, जिधर बैठा है वहां तुम्हारा उत्तम भाग है। भगवान ने तुम्हे right दुख सुख दिया है जो होता है सब कुछ right होता है बेइंसाफी कभी नही होती..इंसाफ ही इंसाफ होता है। बेइंसाफी तभी समझता है जब तुम्हें इच्छा है।

मेरा एक ही बेटा मार दिया, तुम तो बोलेंगे अंधेर हो गया। माई का एक ही बेटा था मार दिया माई ने समझा क्यों यह मेरा बेटा है। ये इसकी wrong समझ है। अज्ञान है ये, अज्ञान की वजह से माई दुखी है के ज्ञान की वजह से दुखी है। ज्ञानी पहले से ही समझता है मेरा बेटा है ही नहीं। अगर मर भी जाए तो यही समझता है अपनी अमानत लेके गया है, भगवान की चीज़ है हमारी चीज़ कहां से आई।

एक माई दूसरी माई को छाता देके गई। बोला ये संभाल के रखना.. मैं कभी भी तुम्हारे से लेने आऊंगी। उसने क्या किया छाते को अच्छे से संभाल के पाउडर डाल के अलमारी में रखा। 12 महीना हो गया। 10 जून का दिन आया, माई जाके छाता लेने लगी, कहती वापिस करो। वो रोने लगी। कहती 12 महीने मैने संभाला, ये किया वो किया, अब 10 जून आ गई हमारे को जरूरत है बरसात आ गई और तुम लेने आई। माई कहती हमारा छाता है, हम कभी भी लेने आए। जब तुम पाल के पोस के बच्चे को बड़ा करते हो, तुम्हें जरूरत है बच्चा कमा के खिलाएगा तभी बच्चा लेने आता भगवान। ऐसा भगवान होशियार है। जब तुम दिल लगा के पूरी चीज़ से बैठता है तब भगवान आता ये चीज़ हमारी है तुम्हारे कहा है। तुम्हारा था क्या? ऐसा भगवान इम्तेहान लेता है की तुमने मेरे से ज्यादती दूसरे से प्यार क्यूं किया। मैं अंदर बैठा हूं, अंदर वाले से प्यार ना कर के बाहर से प्यार क्यूं किया? बाहर ये तिलसम बाज़ी है, धोखा है। शरीर मटका है, मटके से प्यार किया मटके के अकाश से प्यार नहीं किया! कपड़ो से प्यार किया, कपड़े पहने वाले से प्यार नहीं किया इसलिए भगवान गुस्सा होके तुम्हारे से ये कपड़ा छीन लेता है| यह जो कांच का खिलौना है तुम इससे खेल करता है। पता नहीं है यह टूटेगा कैसा बेवकूफ है कांच के खिलौने से खेल करते हैं। एक दिन तो टूटने वाला है। उसी से कैसे दिल बहला के बैठ गया। देखा दुनिया का झूठा झमेला तो मन को हटाना पड़ा।